ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -25 | नवम्बर - II - 2023 | अंक - 16 | माउण्ट आबू | Rs.-12

ब्रह्माकुमारीज़ के ओआरसी रिट्रीट सेंटर में शिक्षाविदों का तीन दिवसीय सम्मेलन

शिक्षा नीति में आध्यात्मिकता द्वारा होगा सर्व समस्याओं का समाधान

ओआरसी-गुरुग्राम। शिक्षक के सशक्त होने से ही समाज सशक्त हो सकता है। सशक्तिकरण का मूल केन्द्र आध्यात्मिकता है। उक्त विचार ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शांति रिट्रीट सेंटर में शिक्षाविदों के लिए आयोजित तीन दिवसीय सेमिनार के समापन सत्र में **राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सलाहकार, परामर्शदाता एवं श्री पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. श्रीहरि होनवाड़** ने व्यक्त किए। 'एजुकेटर्स क्रिएटिंग फ्यूचर लीडर्स' विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान समय आध्यात्मिक सशक्तिकरण की अत्यधिक आवश्यकता है। यदि हम कल के लिए एक स्वस्थ समाज का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें शिक्षा में मूल बदलाव करने होंगे।

शिक्षक का कार्य केवल सूचना प्रदान करना नहीं बल्कि अपने आदर्श व्यक्तित्व से प्रेरित करना भी है

गुरुग्राम, नॉर्थ कैप के प्रो. वाइस चांसलर प्रेम व्रत ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के सहयोग से उन्होंने विश्वविद्यालय में एक वैचारिक प्रयोगशाला स्थापित की है। जिसके बेहतर परिणाम मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक का कार्य सिर्फ सूचना देना नहीं बल्कि अपने आदर्श व्यक्तित्व से भी प्रेरित करना है।

जो भी कार्य करें उसमें ईमानदारी, निष्ठा और पारदर्शिता ज़रूरी है

हनुमानगढ़, खुशाल दास विश्वविद्यालय ने कहा कि भारत ही आध्यात्मिकता का जन्मदाता है। इसलिए आवश्यकता है, आत्मिक दृष्टिकोण अपनाने की। अपने मौलिक गुणों और स्वभाव का अनुभव आ गईं। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी समस्या यही है कि हम भगवान से संबंध नहीं जोड़ पाते। लेकिन यहां के वातावरण में उन्हें वो आनंद मिला कि जैसे वो ईश्वर

की कार्यकारी निदेशक डॉ. शशि मोरोलिया ने कहा कि समाज में शिक्षक की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। शिक्षा में नैतिक मूल्य ज़रूरी हैं। हमारी सबसे बड़ी लड़ाई खुद से है। हम जो भी कार्य करें, उसमें ईमानदारी, निष्ठा और पारदर्शिता हो। **ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. बृजमोहन** करना ही आध्यात्मिकता है। **महाराष्ट्र से संस्था के शिक्षा प्रभाग की संयोजिका ब्र.कु. वसंती दीदी** ने कहा कि धर्म का वास्तविक अर्थ धारणा है। आध्यात्मिकता हमारी उन्हीं धारणाओं को जागृत करती है। **जीडी गोयनका विश्वविद्यालय की डीन डॉ. अनुराधा** ने कहा कि यहां आने से ही उन्हें लगा कि वो एक नई दुनिया में से जुड़ गई हों। **एमिटी विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. संजय झा** ने कहा कि आज हम सब मानव तो हैं लेकिन मानवीय गुणों का अभाव है। इसलिए आवश्यकता है, मानवीय गुणों से युक्त मानव निर्माण करने की। मानव मूल्यों की शिक्षा ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान दे रहा है। **एमएसएमई के निदेशक रवि नंदन सिन्हा** ने ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के साथ का अनुभव साझा किया, और कहा कि विश्व योग दिवस के साथ-साथ विश्व आध्यात्मिक दिवस मनाने की भी ज़रूरत है। कार्यक्रम में करोल बाग सेवाकेन्द्र की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी व मुंबई से आए मोटिवेशनल स्पीकर प्रो. ईवी गिरीश ने भी अपने विचार रखे।

सम्मेलन में...

- पैनल डिस्कशन के माध्यम से शिक्षा में गुणवत्ता का समावेश एवं एथिकल डिलेमा जैसे विषयों पर हुई चर्चा
- ओम शांति रिट्रीट सेंटर में शिक्षा में सुधार पर हुई चर्चा
- राजयोग के विभिन्न सत्रों के माध्यम से समझाई गई ईश्वरीय ज्ञान की बारीकियां
- राजयोग विचार प्रयोगशाला का भी किया आयोजन
- विभिन्न स्टाल्स में मन की एकाग्रता, धैर्यता, प्रेम, शांति और परमधाम की अनुभूति के आधार पर गेम्स बनाए गए

सेवाकेन्द्र की 21वीं वर्षगांठ पर...

आध्यात्मिक ऊर्जा अथक व निरन्तर कार्य के लिए प्रेरित करती : सांसद

वडोदरा-अटलादरा(गुज.)। नवनियुक्त मेयर पिंकी सोनी, डेप्युटी मेयर चिराग बारोट एवं स्टैंडिंग कमेटी अध्यक्ष डॉ. शीतल मिस्त्री के सम्मान एवं अटलादरा सेवाकेन्द्र की संचालिका राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. अरुणा दीदी

को उनकी 30 वर्षों में की गई आध्यात्मिक एवं सामाजिक सेवाओं के लिए आईटीएम वोकेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा दी गई डॉक्टरेट इन लिटरेचर की उपाधि के लिए सम्मान के उपलक्ष्य में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अपने विचार व्यक्त करते हुए मेयर पिंकी ने कहा कि सचमुच यहां मैं गहन शांति के अनुभव से भाव विभोर हो रही हूँ। उन्होंने ये भी कहा कि मैं पहले भी राजयोग कोर्स कर चुकी हूँ और अब दुबारा अपने परिवार के साथ राजयोग कोर्स करूंगी। स्टैंडिंग कमेटी अध्यक्ष शीतल मिस्त्री ने कहा कि यहाँ के आध्यात्मिक वातावरण में आकर मैं खुद को भाग्यशाली अनुभव कर रहा हूँ और एक आनंद की अनुभूति कर रहा हूँ। सुख और दुःख की स्थिति समय के साथ बदलती रहती है, लेकिन आनंद- सुख-दुःख दोनों ही स्थितियों में हमारी एक समान प्रसन्न मनोदशा का नाम है। ऐसी सम अवस्था हम राजयोग द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। माननीय सांसद रंजन भट्ट ने कहा कि राजयोग द्वारा मैं जिस आध्यात्मिक ऊर्जा का यहां अनुभव करती हूँ वह मुझे अथक एवं निरंतर कार्य में तत्पर रहने की शक्ति देती है।

आईटीएम वोकेशनल यूनिवर्सिटी द्वारा दी गई डॉक्टरेट इन लिटरेचर की उपाधि

आईटीएम यूनिवर्सिटी वाइस चांसलर डॉ. अनिल बिसेन ने राजयोग से विकसित हुई संकल्प शक्ति के प्रयोग द्वारा कैसे हम किसी बड़े और कठिन कार्य को भी सहजता पूर्वक कर सकते हैं इस संदर्भ में अपना सुंदर अनुभव सुनाया। जिसके पश्चात् सेवाकेन्द्र सह संचालिका ब्र.कु. पूनम ने कार्यक्रम में आये सभी मेहमानों का धन्यवाद किया।

माइंड-बॉडी-मेडिसिन 48वीं नेशनल कान्फ्रेंस का सफल आयोजन

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अंतरराष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन परिसर में मेडिकल विंग की ओर से 48वीं माइंड बॉडी मेडिसिन में अंतरराष्ट्रीय मोटिवेशनल स्पीकर ब्र.कु. शिवानी दीदी ने कहा कि सभी डॉक्टर्स आज से खुद को मानकर चलें कि मैं फरिश्ता हूँ, मैं एंजेल हूँ, फरिश्तों को कभी टेंशन या तनाव नहीं होता है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा बन जाते क्योंकि संकल्प से सृष्टि बनती है। इसलिए अपनी दिनचर्या से नकारात्मक शब्दों को हटा दें। जब तक हम अच्छा बनने, श्रेष्ठ बनने के बारे में सोचेंगे नहीं, संकल्प नहीं करेंगे, अच्छा सुनेंगे-पढ़ेंगे नहीं तो फिर अच्छा कैसे बनेंगे! श्रेष्ठ, पॉज़िटिव संकल्प करेंगे तो ही श्रेष्ठ बनेंगे। प्रत्येक कर्म की शुरुआत संकल्प से होती है। अगर आपका माइंड पॉवरफुल, स्ट्रॉन्ग और पॉज़िटिव एनर्जी से भरपूर रहेगा तो आपके संपर्क में आने वाले मरीजों को भी पॉज़िटिव वायब्रेशन फील होंगे। महासचिव राजयोगी ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि बनाने के लिए तो एक्सरसाइज़ करते हैं, जिम जाते हैं लेकिन मन को शक्तिशाली बनाने पर ध्यान नहीं देते

दुनिया में शांति अध्यात्म से ही आएगी। मीडिया निदेशक ब्र.कु. करुणा ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ ईश्वरीय विश्व विद्यालय में ज्ञान शिक्षा के माध्यम से दिया जाता है। ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिड्ढा ने कहा कि हम सभी शरीर को मजबूत हैं। नेपाल के हेल्थ साइंसेस हॉस्पिटल के डॉ. विकास ने कहा कि आज डॉक्टर के लिए शरीर के ज्ञान के साथ माइंड का ज्ञान होना बहुत ज़रूरी है। आंध्रप्रदेश के एचआरडी कमेटी चेयरमैन सत्यनारायण राजू ने कहा कि सभी डॉक्टर इस कॉन्फ्रेंस का भरपूर लाभ लें। स्वागत भाषण विंग के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. डॉ. बनारसी ने दिया। भोपाल की डॉ. ब्र.कु. प्रियंका ने राजयोग मेडिटेशन की अनुभूति कराई। नवजीवन हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. बृजेश सिंघल,ग्वालियर ने भी अपने विचार व्यक्त किए। संचालन ब्र.कु. श्रीनिधि ने किया।

अपने को शक्तिशाली बनाने के लिए रोज करें ये सात संकल्प : शिवानी

शिवानी दीदी ने सभी को संकल्प कराया कि आज से रोज़ सुबह, शाम और बीच-बीच में दिन में संकल्प करें कि मैं शांत स्वरूप आत्मा हूँ, मैं ज्ञान स्वरूप आत्मा हूँ, मैं प्रेम स्वरूप आत्मा हूँ, मैं सुख स्वरूप आत्मा हूँ, मैं शक्ति स्वरूप आत्मा हूँ, मैं पवित्र स्वरूप आत्मा हूँ, मैं आनंद स्वरूप आत्मा हूँ... जब इन संकल्पों को रोज़ मन में बार-बार दोहराएंगे तो आत्मा के मूल संस्कार जागृत होने लगेंगे। आत्मा की पॉवर बढ़ने लगेगी। मस्तिष्क बलशाली होने लगेगा।

संस्कार.... अपने आप में एक बड़ी शक्ति...!

हम सुनते आये हैं, धन गया तो कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो थोड़ा बहुत गया, किंतु चरित्र गया तो सबकुछ गया। हमने देखा, वर्तमान समय में वो लोग भयभीत हो गये जिनका स्वयं पर विश्वास नहीं था। अब समय आ रहा है चेंज से चरित्र बनाने का। चरित्र अर्थात् अपने में दैवी संस्कार की पूंजी निर्मित करना। संस्कार अपने आप में एक शक्ति है। वो मनुष्य को सुरक्षा प्रदान करती है। हमने देखा, परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा को उनके दैवी संस्कारों की याद दिलाई और उनके संस्कार इमर्ज हो गये। फिर भले ही कितनी भी कठिनाइयां, समस्याएं उनके सामने आईं, फिर भी अपने डिवाइन संस्कार की शक्ति के कारण वे अपने मनोरथ सिद्ध करने में सफल रहे। नूतन वर्ष में नया आयाम और नये ढंग से अपने को चेंज करना होगा, अन्यथा तो बीते हुए वर्ष की तरह ही हम हैप्पी दीपावली आदि विश करके अपना मुख मीठा कर, मिया मिट्ठू बनकर ही रह जायेंगे।

राजयोगी ब्र.कु. गंगाधर

हम जो भी भविष्य में श्रेष्ठता की कामना करते हैं उस कार्य में बाधक हमारे पुराने संस्कार ही तो हैं। सबकुछ होते हुए भी इतिहास गवाह है कि जिसका चरित्र-बल निर्बल था, उसकी हमेशा ही हार हुई है। अगर रामायण का संदर्भ भी देखें, जब श्रीराम और रावण का भयंकर युद्ध हुआ, आखिर में रावण गिर पड़ा। उसी वक्त राम ने लक्ष्मण को कहा कि आप रावण के पास जाएं और उनसे सीखें। परंतु उस वक्त लक्ष्मण के मन में बहुत उमंग था कि रावण की हार हुई और उनका मन राम की बात स्वीकार करने की स्थिति में नहीं था। फिर भी श्रीराम की आज्ञा मानकर वे रावण के पास गये। तब धरती पर पड़े रावण ने लक्ष्मण से कहा, मेरे पास सबल शस्त्र-सेना थी, मेरे राज्य में ही हम युद्ध लड़ रहे थे और सबको ये विश्वास भी था कि लंका नरेश की कभी हार नहीं हो सकती। वहाँ की प्रजा तो क्या, देवतायें भी मुझसे कांपते थे। फिर भी मेरी हार क्यों हुई? क्योंकि मेरा चरित्र ठीक नहीं था। चरित्र अर्थात् श्रेष्ठ संस्कार की शक्ति मेरे पास नहीं थी। इसीलिए मेरी हार हुई। श्रीराम के पास चरित्र का बल था। तो कहने का भाव यह है कि संस्कार अपने आप में एक शक्ति है जो विपरीत परिस्थितियों में भी हमें एक संबल देती रहती है। हमने यहाँ संस्थान में देखा कि जब ज्ञान का विस्तार हुआ तो हमारे ब्रह्मा बाबा के साथ जो भी वरिष्ठ जुड़े, उन्होंने अपने संस्कारों को इतनी दिव्य शक्तियों से भर दिया, कि फलस्वरूप वे जहाँ कहीं भी जाते, बिल्कुल निर्भय होकर सत्य ज्ञान बिना झिझक, बड़े ही नशे से, बड़ी ही शालीनता से देते। क्योंकि दुनिया वालों के लिए ये नवीन ज्ञान था। जिन मान्यताओं के साथ दुनिया चल रही है उससे भिन्न था।

ऐसे ही हम अगर इतिहास में जायें तो श्रीकृष्ण, श्रीराम से आगे चलते हुए गौतम बुद्ध की बात यहाँ बताना उचित होगा। एक बार गौतम बुद्ध जंगल में जा रहे थे। रास्ते में एक छोटा-सा गांव आया। गांव में सन्नाटा था। कोई भी घर से बाहर नहीं निकल रहा था। उन्होंने एक सज्जन से बात की। सज्जन से बात करने पर पता चला कि वहाँ पास के जंगल में रहते एक बड़े अंगुलीमाल डाकू का भय चारों ओर फैला हुआ था। वहाँ का राजा भी इस अंगुलीमाल से बहुत भयभीत था। वो भी उसके सामने हिम्मत नहीं करता था। क्योंकि वो अंगुलीमाल डाकू, लोगों की छोटी अंगुली काटकर, उसकी माला बनाकर अपने गले में पहनता था। अब तक उसने 999 अंगुलियां काटकर गले में डाली थी और उसका लक्ष्य 1000 अंगुलियों की माला पहनने का था। ये बात सुनकर बुद्ध ने कहा, आप सब अंदर में रहो, मैं जंगल में जाता हूँ। बुद्ध जंगल की ओर अकेले आगे चलने लगे। उन्हें मालूम था कि जंगल में डाकू छिपा हुआ है, फिर भी वे अपनी तेज़ रफ्तार से आगे चलते गये। अंगुलीमाल ने आगे चलते हुए बुद्ध को देखा और वो उनको पकड़ने के लिए उनके पीछे-पीछे चलने लगा। लेकिन बुद्ध बहुत रफ्तार से आगे चल रहे थे और उसकी पकड़ में नहीं आ रहे थे। ऐसे में अंगुलीमाल ने आवाज़ दिया, रुक जाओ। बुद्ध रुके और पीछे मुड़कर बड़े शांति से कहा, मैं तो कई वर्षों पहले ही रुक गया, तुम कब रुकोगे! मैं वर्षों पहले दूसरों को दुःख देने से रुक गया हूँ, अब तुम्हें भी रुकना है इससे। अंगुलीमाल ने देखा, ये पहला व्यक्ति है जो बड़ी शांति से, निर्भय होकर मुझसे ये कह रहा है। ये बात उसके मन को छू गई और वो परिवर्तित हो गया। ये कौन-सी शक्ति थी? ये संस्कार की ही शक्ति थी ना! दिव्य संस्कार में ही ये पॉवर है जो दूसरों को भी भीतर से परिवर्तित कर सकती है। तो हमने यहाँ पहले-पहले अपने स्वमान से संस्कार को परिवर्तित करना सीखा और बाबा हमेशा कहते हैं, आप जो हैं, जो आपकी शक्ति है उसको जानो, पहचानो, समझो क्योंकि जो आप हैं वही आप दूसरों को दे पायेंगे और उनका परिवर्तन कर सकेंगे। संस्कार से ही संसार परिवर्तन होता है। तो हमें पहले स्वयं के संस्कार को परिवर्तित करना होगा, अर्थात् अपने व्यक्तित्व, चरित्र को चेंज करना होगा। और उस चेंज से ही बदलाव आयेगा।

बचत का खाता कैसे बढ़ाएं

बाबा ने विश्व कल्याण की सेवा की ज़िम्मेवारी का ताज आप सबको दिया है। जब से ब्रह्माकुमारी बनी तब से मेरे ऊपर डायरेक्ट बाबा ने यह ताज रखा है, निमित्त टीचर बनाया है।

मौन रखना सबसे अच्छा है। इसके कई फायदे हैं। मौन में मन्सा सेवा करेंगे तो आपका समय बच जायेगा। शुरू में मौन भट्ठी के अंतर्गत ही यह सूक्ष्मवतन का राज़ खुला था। तो मौन में रहने से जो टाइम बचेगा उसमें मन्सा सेवा करनी है। योग करना, इसी से सब बचत हो जायेगी। लोग तो स्थूल धन बचाते हैं, लेकिन हमारा मुख्य खज़ाना है - संकल्प शक्ति। क्योंकि योग का आधार संकल्प शक्ति ही जो यह दिमागी एनर्जी है, वह भी हमारा एक खज़ाना है। दिमाग की इस एनर्जी को भी अगर हम ऐसे ही गंवा देते हैं तो हमारे शरीर पर उसका असर आता है। जो ज़्यादा बोलते हैं और जो ज़्यादा दिमाग चलाते हैं उनका दिल और दिमाग कमज़ोर होता है क्योंकि वह एनर्जी गंवा देते हैं। इससे फिर योग भी नहीं लगेगा, मूड भी ऑफ कर बैठेंगे। तो दिमाग की एनर्जी भी हमारा खज़ाना है। वह हमको कभी नहीं गंवानी चाहिए।

कईयों को योग का अनुभव कम है। भल कहते हैं हम योगी हैं। तो दिमाग की एनर्जी फालतू बातों में और छोटी-सी बात को बड़ा करने में वेस्ट होती है। वह किसी बात से

राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी

ज्ञान तो सुन लिया लेकिन जब तक उस ज्ञान को मनन नहीं करेंगे तब तक अपना नहीं बनेगा। बाबा ने जो ज्ञान का खज़ाना दिया है उस खज़ाने को मनन शक्ति से ही अपना बना सकते हैं।

है। संकल्प शक्ति के आधार पर ही हमारा योग लग सकता है। और मन साफ होगा तो ज्ञान का मनन हो सकेगा। मन से ही तो मनन करेंगे ना! ज्ञान तो सुन लिया लेकिन जब तक उस ज्ञान को मनन नहीं करेंगे तब तक अपना नहीं बनेगा। बाबा ने जो ज्ञान का खज़ाना दिया है उस खज़ाने को मनन शक्ति से ही अपना बना सकते हैं। समय भी हमारा सबसे बड़ा खज़ाना है। समय भी हमारा सफल किस आधार से हो सकता है, जब हमारा मन ठीक होगा और मन ठीक होगा तो बुद्धि भी ठीक करेंगे। तो सारा आधार हमारा संकल्प शक्ति पर है। सन्तुष्ट नहीं होंगे क्योंकि दिमाग की एनर्जी कमज़ोर है इसलिए कोई बात दिमाग में आयेगी ही नहीं। तो कभी भी अपने दिमाग की एनर्जी वेस्ट नहीं करो। वेस्ट होती है व्यर्थ बातों से, छोटी-सी बात को बड़ा करने से। बड़ी को छोटा करना सीखो, छोटी बात को बड़ा नहीं करो तो एनर्जी जमा होगी। अगर एनर्जी वेस्ट जाती है तो न ज्ञान बुद्धि में आयेगा, न मनन शक्ति होगी, न योग लगेगा। और योग नहीं लगेगा तो ब्राह्मण जीवन का सुख नहीं ले सकेंगे इसलिए इसकी बहुत सम्भाल रखना, ज़रा भी व्यर्थ बात बुद्धि में टच नहीं हो जाए।

राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी

सम्पन्नता और सम्पूर्णता का अनुभव

मैं अपने आपसे पूछती हूँ मेरा फुल कनेक्शन एक बाबा के साथ है? बाबा से मेरी बुद्धि की लाइन क्लियर है? बाबा मेरे से सदा सन्तुष्ट है? बाबा के पास मेरी कोई कम्प्लेन तो नहीं है? मेरे में कोई अणु जितना दाग तो नहीं है?

मैं अपने डायमण्ड को अपने नेत्रों के सामने लाकर उसे दिव्य नेत्र से देखती हूँ कि मुझ डायमण्ड में अभी तक कोई फ्लो तो नहीं है? जैसे हीरे को आई ग्लास में देखा जाता, मैं भी आई ग्लास में अपने को देखती हूँ, मेरा बाबा मेरे लिए आई ग्लास है। मैं बाबा के पास ऊपर चोटी पर बैठ देखती हूँ कि बाबा के गुणों के समान मेरे में सर्वगुण भरतू हैं या नहीं? जब बाबा ने मुझे सच्चा डायमण्ड बनाया है तो मुझ डायमण्ड में कोई भी दाग नहीं रहना चाहिए। मैं सदैव दो शब्दों का ध्यान रखती हूँ - 1. अब, 2. सब। अगर कोई दाग है, कमी है तो उसे अभी ही निकालना है और सभी दाग निकालने हैं।

कई बार मुझे ऐसे लगता जैसे बाबा मेरे कानों में यह आवाज़ देता-बच्ची, तुम्हारी रीति है एक सेकण्ड में पंछी उड़ जा, हम सब पंछी एक सेकण्ड में उड़ जायेंगे। मैं एक सेकण्ड का पंछी हूँ, यह सेकण्ड, यह मिनट, दिन बीता, रात सोये, सवेरे उठे, तो यह मेरे सेकण्ड, मिनट, घंटे कितना कमाई में जमा हुए? रोज़ मैं यह चेक करती हूँ। बाबा हमें रोज़ यह स्लोगन देता कि बच्ची तेरे भाने सर्व का भला, तेरी चढ़ती कला माना सर्व का भला। तो मैं हमेशा सोचती कि मेरा एक एक सेकण्ड कमाई में बीते, ऐसे नहीं अलबेले होकर रात को सोया, दिन में खाया, हँसा-बहला, दिन-रात पूरा हुआ। हमें तो आता कि यह संगम के थोड़े दिन कितने न महान हैं! यह गिनती के दिन हैं, यह कितने वैल्युबल दिन हैं! ऐसा सोचकर अन्दर ही अन्दर सम्पन्न बनने की मेहनत करती हूँ, लक्ष्य रहता है मुझे तो बाप समान कर्मातीत बनना ही है।

मुझे बाप समान बनना है तो अब बनना है। फुल त्याग, फुल तपस्या, फुल सेवा मुझे अभी करनी है। मेरी फुल लगन बाबा के साथ अब होनी चाहिए। दूसरा मैं सर्वशक्तिवान बाप की बच्ची हूँ तो मेरे में सर्वशक्तियां होनी चाहिए,फुलफोर्स होना चाहिए। मैं अपने अन्दर यह सोचती हूँ और सोचते-सोचते बाबा के अन्त में चली जाती हूँ।

मैं यह भी देखती हूँ कि सर्व के लिए मेरे अन्दर शुभ भावना है? मैं ऊपर में जाकर देखती हूँ कि मेरी वृत्ति साफ-पवित्र और सुन्दर है? फिर भी अगर मेरे से कोई सन्तुष्ट नहीं तो वह उसकी बात है। बाकी शुभ भावना, सच्चाई का आज नहीं तो कल रिकार्ड बजेगा। किसी की स्थिति से मैं अपना रिकार्ड क्यों खराब करूँ! मैं ऊपर चोटी की स्थिति में स्थित रहती हूँ, यह बाबा की बहुत बड़ी गृहस्थी है, हम पार्ट बजा रहे हैं। मैं गृहस्थी नहीं हूँ। मेरा बाबा चोटी पर है तो मैं नीचे क्यों आऊं।

बाबा ने हमें सेकण्ड में संकल्पों को स्टॉप करने की शक्ति दी है। बीच-बीच में मैं अपने संकल्पों को स्टॉप कर लेती हूँ। मैं कभी अपने समय व शक्ति को वेस्ट नहीं करती हूँ।

बाह्यमुखता से हटकर अन्तर्मुखता में आयें

राजयोगिनी दादी जानकी जी

अपने को आत्मा समझना और एक को याद करना - बाबा बार-बार यही पाठ पक्का कराता है। क्योंकि आत्मा समझने से देह अभिमान छूटेगा और बाबा को याद करने से पाप कटेंगे। यह बात सारे दिन में न भूलें। बाबा कहता है मैं घड़ी-घड़ी याद दिलाता हूँ क्योंकि बच्चे घड़ी-घड़ी भूल जाते हैं।

ऐसे तो मरने पर भी आत्मा शान्त चित्त नहीं हो सकती है, तो जीते जी कैसे हो सकती है? शान्ति कोई सहज बात है क्या! पर बाहर की बातों से फ्री हो करके जब डीप जाओ, अन्दर ही अन्दर चले जाओ तो जो मरने से भी शांत नहीं होते थे, वो जीते जी शान्त हो जाते हैं। आत्मा अपने निजी स्वरूप को जान करके उसमें अन्दर तक जब तक न जाये तब तक बाहर नहीं आना। जल्दी-जल्दी जम्प लगाके बाहर आते हैं, अरे, अन्दर तो चले जाओ ना, डुबकी लगाओ तो सही। जिसको स्विमिंग करना नहीं आता, उसे डर लगता है कि डूब न जाऊं तो इसमें भी सब बातों को छोड़ना पड़ेगा, भूलना पड़ेगा, किसको बुद्धि से अवॉयड करके अन्तर्मुखी रहना पड़ेगा क्योंकि बाह्यमुखता ऐसा खींचती है, बात मत पूछो।

जिसको स्विमिंग करना नहीं आता, उसे डर लगता है कि डूब न जाऊं तो इसमें भी सब बातों को छोड़ना पड़ेगा, भूलना पड़ेगा, किसको बुद्धि से अवॉयड करके अन्तर्मुखी रहना पड़ेगा...

हरेक अपने दिल से पूछे हम ऐसे अन्तर्मुखी बनें हैं, जो अन्तर्मुखी सदा सुखी का अनुभव होता रहे। तो अन्तर्मुखी वो बनेगा जो अपने अन्दर से बाप की बातें सुनता है, मुख के अन्दर है, पर बोलता नहीं है मुख। सुनता है अपने को देखने के लिए। तो बाह्यमुखता की आदत से छूटने के लिए अन्दर की आँख से अन्तर्मुखी बनना पड़ेगा। अन्दर भी बाहर की बातें सोचने की आदत है, हरेक दिल से पूछे सारा दिन क्या करते हैं? स्वप्नों में क्या करते हैं? अन्दर संकल्प में शान्ति नैचुरल हो। नींद नहीं आती है, ठीक है कोई बात नहीं है, अच्छा है, मज़ा है - बाबा को याद करने का, अपने आपको देखने का। जितना टाइम सोते हैं, बाबा कहता है कमाई तो नहीं होती है। पहले-पहले बाबा कहते थे कोई पाप करे उससे तो जाकर सो जायें तो अच्छा है। परन्तु कई ऐसे हैं जो स्वप्नों में भी पाप करते हैं, तो हम अटेन्शन देते हैं, जागते हैं तो भी अटेन्शन है। कोई हमको खराब ख्याल आ नहीं सकता। किससे बदला लेने का ख्याल आ नहीं सकता। मानो मैं उदास हुई तो पहले ख्याल आया ना! बाहर से करके मुस्कुराये, पर अन्दर से देखते हैं तो लगता है कि इसके अन्दर कुछ है। बाहर से हेलो, ओम शान्ति करता है पर अन्दर कुछ और है।

हरेक अपने आपसे पूछो कि मेरे अन्दर कुछ है क्या? दिल से पूछो, क्या है? दिल मेरी है, अपने दिल से हम पूछ सकते हैं कि मैं खुश हूँ? न खुश हूँ तो कारण? कारण कुछ भी नहीं है, सिर्फ न खुश रहने की आदत है। पुराना कोई संस्कार है तो दिल से खुश कैसे रहेंगे? पर सच्ची दिल है, साहब राज़ी है तो क्या होगा? भगवान भी कहे, सर्टिफिकेट देवे कि यह मेरा बच्चा सन्तुष्ट है, वरदान दे देवे, सदा सन्तुष्ट भव! जब साइलेन्स में डीप जायेंगे तो अपने अन्दर की सच्ची शान्ति को भंग नहीं करेंगे। नियम प्रमाण शान्त रहने का जो नियम है वो तोड़ेंगे नहीं। इसलिए शांत रहना है और शांत करना है।

देवलोकगमन : ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका का निधन : डॉ. निर्मला दीदी को सांस लेने में हो रही थी तकलीफ, अहमदाबाद में चल रहा था इलाज

संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. निर्मला दीदी का अव्यक्तलोकगमन

ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. निर्मला दीदी।

ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी से मिलते हुए डॉ. निर्मला दीदी।

भारत की राष्ट्रपति माननीय द्रोपदी मुर्मू को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी व कार्यकारी सचिव राजयोगी डॉ. ब्र.कु. मृत्युंजय।

राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे के साथ राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी।

भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जेपी नड्डा से मुलाकात करते हुए राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी। साथ हैं कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय व ब्र.कु. शिविका।

कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी के साथ राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी।

आबूरोड ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका डॉ. निर्मला दीदी का 88 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उन्होंने अहमदाबाद के हॉस्पिटल में 20 अक्तूबर, 2023 सुबह 11बजे अंतिम सांस ली। वे कुछ समय से बीमार चल रहीं थीं।

डॉ. निर्मला दीदी 27 वर्ष की आयु में ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ीं और पूरा जीवन समाज कल्याण में समर्पित कर दिया। ब्रह्माकुमारीज़ की कोर कमेटी मेंबर होने के साथ आपने संस्थान के संस्थापक ब्रह्माबाबा से ज्ञान प्राप्त किया। सरलता, विनम्रता और उदारता की प्रतिमूर्ति डॉ. निर्मला दीदी के जीवन से प्रेरणा लेकर हज़ारों लोगों ने अपना जीवन आनंदमय बनाया।

डॉ. निर्मला दीदी ने अपना पूरा जीवन विश्व के कल्याण में लगा दिया। आपने वर्षों तक विदेश में रहकर ईश्वरीय सेवाएं कीं। आपके ज्ञान और जीवन से प्रभावित होकर हज़ारों लोगों को आध्यात्मिक पथ पर चलने की प्रेरणा मिली। आपका सरल और विनम्र स्वभाव सभी को प्रभावित करता था। ऐसी आध्यात्मिक जगत की महान आत्मा को भावपूर्ण श्रद्धांजली।

वर्ष 1935 में मुंबई में हुआ था जन्म

मुंबई के प्रसिद्ध व्यापारी परिवार में वर्ष 1935 में जन्मी डॉ. निर्मला दीदी बचपन से ही प्रतिभावान रहीं। आप बचपन से खेलकूद के साथ पढ़ाई में विशेष रूचि रखती थीं। वर्ष 1962 में आपने एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी की। इसी वर्ष आप ब्रह्माकुमारीज़ के संपर्क में आईं। मुंबई में आपने 1962 में ब्रह्माकुमारीज़ की प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती(मम्मा) से ज्ञान प्राप्त कर और उनके जीवन से प्रभावित होकर अध्यात्म के प्रति विशेष रूचि बढ़ गई। मम्मा के प्रवचन सुनकर और पवित्र जीवन ने प्रभावित किया। आपको बचपन से ही समाजसेवा का शौक था।

1964 में पहली बार ब्रह्मा बाबा से मिली

वर्ष 1962 में संस्थान से राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा लेने के बाद आप पहली बार वर्ष 1964 में माउण्ट आबू पहुंची, जहाँ ब्रह्माबाबा से मुलाकात के बाद आपने समर्पित रूप से सेवाएं देने का संकल्प किया। वर्ष 1966 से आप सम्पूर्ण समर्पित रूप से ईश्वरीय सेवाएं दे रहीं थीं। सेवा साधना के इस पथ पर चलने के आपके संकल्प में माता-पिता ने भी सहर्ष स्वीकृति दे दी। यह वह समय था जब महिलाओं का विश्व सेवा में तपस्या की राह पर चलते हुए अपना जीवन समर्पित करना साहसपूर्ण निर्णय होता था।

लंदन से शुरू हुआ राजयोग संदेश, 70 देशों में पहुंचाया

उच्च शिक्षित होने के कारण तत्कालीन मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी प्रकाशमणि ने डॉ. निर्मला दीदी को विदेश सेवाओं की ज़िम्मेदारी सौंपी। वर्ष 1971 में आप पहली बार लंदन पहुंची, जहाँ दादी जानकी के साथ कुछ समय सेवाएं देने के बाद आपने अफ्रीका, मॉरीशस, ऑस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, सिंगापुर सहित 70 देशों में लोगों में अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की अलख जगाई।

ऑस्ट्रेलिया अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजा

अध्यात्म के क्षेत्र में आपकी विशेष सेवाओं को देखते हुए सरकार ने आपको ऑस्ट्रेलिया अचीवमेंट अवॉर्ड से नवाजा। करीब 12साल से आप संस्थान के माउण्ट आबू स्थित ज्ञान सरोवर परिसर की निदेशिका और तीन साल से संयुक्त मुख्य प्रशासिका की ज़िम्मेदारी संभाल रहीं थीं।

पश्चिमी संस्कृति में डूबे लोगों को भारतीय संस्कृति से जोड़ा

दृढ़ इच्छा शक्ति, आत्मबल, उच्च कोटि का चरित्र बल का परिणाम है कि आपने चंद वर्षों में हज़ारों लोगों को प्राचीन राजयोग के माध्यम से पश्चिमी संस्कृति से निकालकर भारतीय संस्कृति से जोड़कर उनके जीवन का सकारात्मक परिवर्तन किया।

राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी को ईश्वरीय स्मृति का तिलक देते हुए राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी।

अव्यक्त बापदादा से वरदान प्राप्त करते हुए राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी।

ब्रह्माबाबा से मिलते हुए राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी, राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि व ब्र.कु. किशोर भाऊ।

पार्टी से मुलाकात करने के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्माबाबा के साथ राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी, दादी प्रकाशमणि व अन्य।

ब्रह्माबाबा के साथ चित्र में राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी, दादी प्रकाशमणि व ब्र.कु. बृजेन्द्रा दादी।

कार्यक्रम में राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी के साथ अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी व संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. मुन्नी दीदी।

कन्याओं के ईश्वरीय समर्पण समारोह में राजयोगिनी डॉ. निर्मला दीदी, राजयोगिनी दादी ईशु व ब्र.कु. सोमप्रभा दीदी।

शांतिवन। नवी मुम्बई के विधायक गणेश नाईक शांतिवन में ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी से ईश्वरीय सौगात प्राप्त करते हुए। साथ हैं ब्र.कु. लीला बहन, ब्र.कु. शीला बहन, ब्र.कु. माला बहन व अन्य।

भिलाई-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा से.7 स्थित अंतर्दिशा भवन के पीस ऑडिटोरियम में संस्थान की अति. मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयंती दीदी के शहर में आगमन पर एनसीसी केडेट्स के द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर देकर तथा छत्तीसगढ़ के पारंपरिक पंथी नृत्य द्वारा उनका स्वागत किया गया। इस दौरान माउण्ट आबू से राजयोगिनी ब्र.कु. हंसा दीदी, छत्तीसगढ़ एवं इंदौर ज़ोन की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमा दीदी, उज्जैन से आईं राजयोगिनी ब्र.कु. ऊषा दीदी, पाटन, दल्ली राजहरा, नंदिनी अहिवारा, बेमेतरा, उतई, डोंडी लोहारा, जामगांव, बेरला सहित भिलाई के सभी सेवाकेन्द्रों के ब्र.कु. भाई-बहनों सहित डॉक्टर्स, प्रिंसिपल, उद्योगपति, समाजसेवी व अन्य लोग शामिल रहे।

अम्बिकापुर-छ.ग.। नशा मुक्त भारत अभियान के तहत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बोझा प्रतापपुर में विद्यार्थियों के लिए आयोजित नशा मुक्त जागरुकता कार्यक्रम के दौरान सरगुजा संभाग की सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, ब्र.कु. पूजा बहन, माउण्ट आबू से आये ब्र.कु. श्याम भाई, समाजसेविका मेमोल जैन, सुषमा, प्राचार्य संतोष भारती, व्याख्याता लल्लू प्रसाद तिवारी व अन्य भाई-बहनों सहित लगभग 200 विद्यार्थीगण मौजूद रहे।

राजकोट-गांधीग्राम(गुज.)। नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत सद्भावना हॉस्पिटल के डॉक्टर सतीश शाह को ईश्वरीय प्रसाद भेंट करते हुए ब्र.कु. नैना बहन व ब्र.कु. भाग्यवती बहन।

राजगढ़-म.प्र.। वृद्ध जन दिवस के कार्यक्रम में आशाधाम वृद्ध आश्रम की संचालिका गायत्री विजयवर्गीय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. मधु दीदी।

पचोर-म.प्र.। पौधा रोपण करते हुए गिरिराज पाटीदार कनिष्ठ यंत्री, दिलीप सिंह राजपूत सब इंस्पेक्टर, ब्र.कु. वैशाली बहन, ब्र.कु. सीमा बहन तथा अन्य।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका राजयोगिनी ब्र.कु. गीता दीदी,माउण्ट आबू

ज़रा सोचें...

हमें अभ्यास कौन-सा है, साकार का। क्योंकि पार्ट में रहे, ज्ञान नहीं था। तो देहधारियों से योग लग गया, देह से अटैच हो गये। वैभव पदार्थों से अटैच हो गये और उस अटैचमेंट में देह भान में कहीं गलत आदतों से अटैच हो गये। स्वभाव बन गये। अब ये एक जन्म की तपस्या से बदलने हैं।

निराकारी बनना अर्थात् सभी प्रभावों से मुक्त हो जाना

ये दुनिया पाँच तत्व की है और दुनिया में जितनी भी चीज़ें हैं, वस्तुएं हैं, साधन हैं, वैभव, पदार्थ हैं वो भी किससे बने हैं? पाँच तत्वों से बने हैं ना! हमारा ये शरीर भी पाँच तत्वों से बना है। हमें उन सबसे डिटैचमेंट लाना है। मैं इनसे अलग हूँ, क्यों बाबा ये तैयारी करा रहे हैं क्योंकि बाबा आत्माओं को ले जायेंगे शरीरों को यहाँ छोड़ना है। तो जीते न्यारापन उनके चेहरे से दिखाई देता है। देखो जो रोज़ सुबह का क्लास करते हैं, रोज़ योग में आ जाते हैं। ऐसे नहीं मुरली के समय आ जाते हैं। जिनको रोज़ प्रैक्टिस है उनके चेहरे देखो। और जो गुरुवार को एक दिन क्लास में आते हैं, या हफ्ते में आते हैं तो उनके चेहरे देखो। बहुत फर्क महसूस होगा। रोज़ की प्रैक्टिस से हम निंद्रा जीत बनते हैं। तो हमें कोई आलस नहीं आयेगा, कोई नींद नहीं आयेगी; और हम देहभान से न्यारे रूहानी आत्मा बनना है। ये खुद संयम रखना कि अब कोई कर्मेंद्रिय से पाप न हो। अब समय कौन-सा है- मन शुद्ध और एकाग्र हो। जब मुख से बाज़ार का खाना छोड़ दिया तो मन से क्यों खाने का! मन से याद करते रहते हैं हम फलाने होटल में जाते थे, भेल-पूड़ी खाते थे। अब ये क्यों याद करना है! मन से भी क्यों जायें! आँखों से फिल्में देखनी नहीं हैं तो देखी हुई फिल्में याद क्यों करनी हैं! बीती हुई बातें क्यों याद करनी हैं! तो बाबा तो सूक्ष्मता में जी प्रैक्टिस करनी है, देह से अलग होने की। वस्त्र हमने पहने हैं, ये स्पष्ट है हम वस्त्र नहीं हैं। हम उनसे अलग हैं। हम शरीर नहीं हैं। शरीर अलग है, हम अलग हैं। तो ये अभ्यास करना है, अपने आपको रियलाइज़ करना है। ये तप है इसको तपस्या कहते हैं। गुफा में बैठकर तपस्या करते हैं।

शरीर एक गुफा है और मैं आत्मा तपस्वी हूँ, ये पक्का करना है। हम गृहस्थी नहीं, संसारी नहीं, हम स्त्री नहीं, हम पुरुष नहीं, हम योगी हैं, तपस्वी हैं। इस अवेअरनेस में, इस स्मृति में हमें रहना है। बाबा हमें ज्ञान दे देते हैं पर प्रैक्टिस में हमें लाना है। तो जितना देह भान से न्यारे रहेंगे उतना हमारे में रूहानियत व अलौकिकता अनुभव होगी। लोगों को लगे कि ये अलग ही हैं। इनकी आँखें अलग हैं, इनके चेहरे अलग हैं। क्योंकि जो बॉडी कॉन्सिस होकर बैठेगा वो अलग होता है। जो सॉल कॉन्सेस होता है उनका दिखाई देंगे। तो बाबा तो हमें कहते हैं ना कि तुम रूहानी बच्चे हो। रूहानी सेवाधारी हो। ये क्यों बाबा हमें पक्का कराता है कि हमें निराकारी बनना है, देह भान से डिटैच होना है, तो डिटैचमेंट तपस्या की नींव है। जब तक हम डिटैच नहीं होते हैं तो हमारा योग बाबा से लगेगा नहीं। योग निराकार से लगाना है ना! और हमें अभ्यास कौन-सा है, साकार का। क्योंकि पार्ट में रहे, ज्ञान नहीं था। तो देहधारियों से योग लग गया, देह से अटैच हो गये। वैभव पदार्थों से अटैच हो गये और उस अटैचमेंट में देह भान में कहीं गलत आदतों से अटैच हो गये। स्वभाव बन गये। अब ये एक जन्म की तपस्या से बदलने हैं।

उस समय ज्ञान नहीं था, हर कर्मेंद्रिय से पाप किए। किसी के कान भरे, कभी मुख से कड़वे शब्द बोले। हर कर्मेंद्रिय से, हाथ से, पाँव से क्या-क्या किया। जब हर कर्मेंद्रिय से पाप किए तो हर कर्मेंद्रिय से अब पुण्य पहुंच गये। हम भी साथ-साथ चलेंगे ना बाबा के पास! बाबा आगे-आगे पढ़ाते जायें और हम पीछे रह जायें।

देखो बाबा ने सबकुछ पढ़ा दिया, पढ़ाई का पाठ पूरा हो गया। जो बाबा ने पढ़ाया वो हमने पढ़ लिया, प्रैक्टिकल बनने में देखो कितना टाइम लगता है, इसलिए कितने लम्बे समय से बाबा तैयारी करा रहे हैं। जब हम ज्ञान में आये तो याद है कि जो लौकिक गृहस्थी लोग थे वो भी बहुत सात्विक थे। नियम-संयम वाले थे। आज समझ में आ रहा है कि बाबा ने क्यों इतने लम्बे समय से पुरुषार्थ कराया। आज इतने विकार बढ़ गये हैं पर वर्षों के पुरुषार्थ के कारण हमें कोई आकर्षण नहीं है। आज इतनी नैचुरल पवित्रता, सेल्फ कंट्रोल आ गया कि आज कोई आकर्षण ही नहीं, हम सेफ हैं। क्योंकि निराकारी बनना माना सभी प्रभावों, लेपों से मुक्त हो जाना।

गांधीनगर-गुज.। गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ से.28 गांधीनगर प्रभारी राजयोगिनी ब्र.कु. कैलाश दीदी के निर्देशन में सह प्रभारी ब्र.कु. जुगनू बहन, ब्र.कु. कृपल बहन, ब्र.कु. पारुल बहन, ब्र.कु. मनीषा बहन, ब्र.कु. भरत भाई, ब्र.कु. निर्मल भाई आदि ने गांधीनगर महानगर पालिका के वार्ड नं.3 से.24, 27, 28 की कॉर्पोरेटर सोनाली बहन पटेल, पदाधिकारी उरेनकुमार पटेल, सवजीभाई सोलंकी तथा अन्य महानुभावों के साथ मिलकर से.28 के प्रख्यात पार्क-पब्लिक गार्डन में विशेष श्रम दान-सफाई अभियान में 'भारत माता की जय' के नारों के साथ साफ-सफाई की।

भुज-आइयानगर(गुज.)। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में कच्छ गुर्जर क्षत्रिय समाज महासभा की अखिल भारतीय महिला मंडल प्रमुख श्रीमति अमिता सोलंकी, महामंत्री रीटा चौहान, नगर पालिका अंजार पूर्व मेयर श्रीमति पुष्पा टांक, प्रादेशिक प्रमुख इला चावड़ा, राष्ट्रीय पूर्व प्रमुख कुंवर टांक, राष्ट्रीय उप-प्रमुख विनोद चौहान, ब्र.कु. बाबू भाई, क्षेत्र समिति अध्यक्ष बलराम जेठवा, राष्ट्रीय वरिष्ठ महामंत्री विनोद खोडियार, महामंत्री जीव राम टांक, शासक पक्ष के नेता सुरेश टांक, ब्र.कु. रीना बहन तथा ब्र.कु. रश्मि बहन।

मंदसौर-म.प्र.। मंदसौर विश्वविद्यालय के कुलपति नरेन्द्र नाहटा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. उषा बहन।

रामायण में दर्शाये पात्र का हमारे जीवन से सम्बन्ध

जानें...

मर्यादा की लकीर में रहकर ही ग्रहचारी छूटेगी

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन,
वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में बताया गया था कि आज के समय में सबसे बड़ा प्रलोभन कौन-सा है, मोबाइल। इस प्रलोभन के कारण हम बाबा को भूल जाते हैं, बाबा से दूर हो जाते हैं...

अब वो हमसे दूर हुए तो मन का लक्ष्य विचलित हुआ। और मन का लक्ष्य विचलित होने कारण लक्ष्मण को भी उट-पटांग बातें बोलना शुरू कर दिया। तो कई बार हमारे मुख से भी जब मन परेशान है, उस प्रलोभन के पीछे है, नहीं मिल रहा है; तो मन का लक्ष्य विचलित होने कारण कुछ भी उट-पटांग बातें बोलना हम शुरू करते हैं। तो लक्ष्मण भी कहता है– 'अच्छा मैं भी जाता हूँ'। 'धारणा' कमज़ोर हो गयी। तो वो लक्ष्मण रेखा खींच के गये, कि माँ इस रेखा से बाहर नहीं निकलना। भले मैं जाता हूँ लेकिन तुम अन्दर रहना। सीता ने भी कहा कि ठीक है मैं अन्दर रहूंगी। लेकिन जब रावण की एंट्री होती है, और रावण ने जब देखा कि लक्ष्मण रेखा इतनी पॉवरफुल है; रावण ने सोचा कि मैं तो अन्दर नहीं जा सकूँगा लेकिन इसको कैसे भी करके बाहर निकालना है। और इसलिए कहा – 'भिक्षां देदे माई', थोड़ा कुछ दे दो, मदद कर दो। सीता मदद करने के लिए आती है कि ठीक है। कहा मैं तो अन्दर नहीं आ सकता हूँ आपको बाहर आना पड़ेगा। भावार्थ यह है कि बाबा हमें रहमदिल बनने के लिए ज़रूर कहते हैं, लेकिन रहमदिल आत्मा भी बनो, किसी को मदद करने की भावना भी रखो तो भी मर्यादा के अन्दर रहकर मदद करना, ये बाबा ने सिखाया है। मर्यादा क्रॉस करके किसी को मदद करने का प्रयत्न नहीं करना। क्योंकि जहाँ कहीं पर भी मर्यादा क्रॉस करके किसी को मदद करने का प्रयत्न किया, तो रावण ज़रूर उठा कर ले जायेगा।

> रहमदिल आत्मा भी बनो, किसी को मदद करने की भावना भी रखो तो भी मर्यादा के अन्दर रहकर मदद करना, ये बाबा ने सिखाया है। मर्यादा का उल्लंघन करके किसी को मदद करने का प्रयत्न नहीं करना। क्योंकि जहाँ कहीं पर भी मर्यादा का उल्लंघन करके किसी को मदद करने का प्रयत्न किया, तो रावण ज़रूर उठा कर ले जायेगा।

तो रावण की एंट्री माना 'कोई-न-कोई मर्यादा का उल्लंघन कराना'। अमृतवेले से लेकर रात्रि तक जो बाबा ने हम बच्चों मर्यादायें दी हैं, उन मर्यादाओं का उल्लंघन करते हैं, तो रावण आता है। इसीलिए अगर किसी को मदद भी करना हो तो मर्यादा की लकीर में रहकर करो।

रावण जब सीता को उठाकर ले गया, तो फिर सीता ने क्या किया? जटायु भी आया मदद करने के लिए, लेकिन उसको भी रावण घायल कर देता है। माना मदद करने नहीं देता है। ऐसे ही, जैसे ही हम परवश हुए, मर्यादा की लकीर को क्रॉस करके मदद करना माना परवश हो जाना। और परवश होना माना, कोई-न-कोई ग्रहचारी हमारे ऊपर बैठ जाना। तो ग्रहचारी जैसे ही बैठती है माना हमारा पुण्य क्षीण हुआ। तो उसके लिए क्या करना पड़ेगा? तो सीता माता ने भी क्या किया? अपने आभूषण उतार-उतार कर फेंकना चालू किया। अर्थात् जब भी जीवन में कोई ग्रहचारी आये, तो ग्रहचारी के लिये यही कहा जाता है – 'दे दान तो छूटे ग्रहण'। दान करना शुरू करो।

चाहे 'ज्ञान' दान करो, चाहे 'योग' दान करो, चाहे सहयोग दो, चाहे स्थूल दान करो, जो भी दान कर सको आप। तो वो ग्रहचारी हल्की होने लगेगी। फिर भी सम्पूर्ण रीति से नहीं उतरेगी। इसीलिए रावण लेके गया ज़रूर, लेकिन अपने महल में नहीं रख सका। बगीचे में रखना पड़ा उसको। और उसके बाद स्पर्श तक नहीं कर सका। क्योंकि वो पवित्रता में वापिस मजबूत हो गयी। लेकिन जो दान किया, चीज़ें फेंकना शुरू किया, उस दान से इतना ज़रूर होता है कि कोई भी आत्मा गलत कर्म नहीं करा सकती हमसे। और कम से कम वहाँ त्रिजटा ज़रूर मिल जायेगी। कोई न कोई ऐसी आत्मा मिलेगी हमें जो हमारी सहयोगी या सहारा ज़रूर बन जायेगी। पुण्य करने से कम से कम ये प्राप्ति ज़रूर होगी।

उसके बाद राम ढूंढते हुए कहाँ जाते हैं? जैसे ही जंगल में आगे बढ़ते हैं, तो उन तक वो आभूषण आदि पहुँचते हैं। माना हमारा दान किया हुआ बाबा तक भी ज़रूर पहुँचता है, इसीलिए पुण्य मिलता है। लेकिन वहाँ से जाते-जाते शबरी मिलती है। और शबरी माना – जिसने झूठे बेर इकट्ठे कर के रख दिए, राम आयेंगे तब खिलायेंगे, राम आयेंगे तब खिलायेंगे इतनी राम की याद में उसने झूठे बेर इकट्ठे किए। बाबा भी गरीब निवाज़ है। तो बाबा के बच्चे भी साधारण हैं। और इसलिए साधारण बाबा के बच्चे भी कुछ न कुछ इकट्ठा करके बाबा के लिए, बाबा के पास जायेंगे तो वहाँ ज़रूर दे देंगे। बाबा के यज्ञ में काम आयेगा, बाबा को मिले। तो अन्दर से बाबा की लगन वाली आत्मायें और जैसे ही उन लगन वाली आत्माओं के सामने भगवान प्रकट होते हैं, कितनी खुशी उनको मिलती है और उनके एक-एक बेर को राम स्वीकार करते हैं। कभी अपमान नहीं करते।

- क्रमशः

विजयनगरम-आ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा युवाओं के लिए की गई निःस्वार्थ सेवाओं एवं संस्थान के युवा प्रभाग द्वारा वाई 20-एजेंडा फॉर यूथ 'हेल्थ,वेल बीइंग एंड स्पोर्ट्स' परियोजना के अंतर्गत 65 से अधिक कार्यक्रम आयोजित कर 12000 युवाओं तक पहुंचकर उन्हें जागरुक करने के लिए जिला प्रशासन की ओर से के.वेंकट उज़्वल,डिस्ट्रिक्ट यूथ ऑफिसर,एनवायके विजयानगरम,मिनिस्ट्री ऑफ यूथ अफेयर्स एंड स्पोर्ट्स गवर्नमेंट ऑफ इंडिया द्वारा राजयोगिनी ब्र.कु. अन्नपूर्णा दीदी को सम्मानित किया गया।

आमगांव बड़ा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में बेटी दिवस के अवसर पर 'देश की शान बेटियां' विषय पर आयोजित आध्यात्मिक मिलन समारोह में श्रीमती शीलू पसारी,प्रिंसिपल,विवेकानंद हाईयर सेकेंडरी स्कूल आमगांव बड़ा, वर्षा पसारी,शिक्षिका, ब्र.कु. वर्षा दीदी, 35 से अधिक बेटियां व उनके परिवार सहित अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें मौजूद रहे।

सिवनी-म.प्र.। विश्व बेटी दिवस के अवसर पर मॉडर्न हाई सेकेंडरी स्कूल सिवनी में छात्राओं को 'सशक्त बेटी सशक्त समाज' विषय पर जागृति दिलाने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. नीतू बहन व स्कूल स्टाफ।

जबलपुर-कटंगा कॉलोनी(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में विशेष आर्मी ऑफिसर्स एवं जवानों के लिए आयोजित रक्षाबंधन व स्नेह मिलन कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल राकेश कपूर,विशिष्ट सेवा मेडल,कमांडेंट कॉलेज ऑफ मटेरियल मैनेजमेंट को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. विमला दीदी।

अमरावती-महा.। आहुजा जी,होटल प्राइम पार्क को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीता दीदी।

साईं खेड़ा-गाडरवारा(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ उपसेवाकेन्द्र द्वारा आर.सी. गार्डन साईं खेड़ा में बेटी दिवस के अवसर पर 'देश की शान बेटियां' विषय पर आयोजित आध्यात्मिक स्नेह मिलन कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. कुसुम दीदी,जिला संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़, ब्र.कु. उर्मिला दीदी,मुख्य संचालिका,स्थानीय उप सेवाकेन्द्र, ब्र.कु. सरोज दीदी,मुख्य संचालिका,ब्रह्माकुमारीज़ करेली, ब्र.कु. जानकी दीदी, ब्र.कु. प्रीति दीदी सहित सभी ब्रह्माकुमारी बहनों का ब्र.कु. भाई-बहनों, माताओं द्वारा ढोल नगाड़ों और कलश यात्रा द्वारा स्वागत करने के पश्चात् मुकुट, चुनरी और हार पहनाकर श्रृंगार व सम्मान किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में कुमारियां व उनके परिवार सहित अन्य भाई-बहनें मौजूद रहे।

For Online Transfer

Name: OM SHANTI MEDIA OF RERF
Pay Directly to: [illegible]

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan, Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319
Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
सम्पर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्कः भारत - वार्षिक - 240 रुपये, तीन वर्ष - 720 रुपये, आजीवन - 6000 रुपये
Website: www.omshantimedia.org

स्वास्थ्य

धनिया बनाये स्वास्थ्य से धनवान

यूं तो हम अपने स्वास्थ्य के लिए कितने नुस्खे अपनाते हैं, कितनी ऐसी चीज़ें होती हैं जो हम नियमित तौर पर अपने खाने में इस्तेमाल तो करते हैं लेकिन टेस्ट के लिए। उनसे हमें हमारे शरीर को क्या-क्या फायदा मिलता वो हमें नहीं मालूम होता तो इसीलिए हम आपको एक ऐसे मसाले के बारे में बतायेंगे जो सब्जी को तो स्वादिष्ट बनाता ही है साथ में उसके फायदे भी अनेक हैं।

सुन्दरता को बढ़ाता धनिया

2 गिलास पानी में, 2 चम्मच साबूत धनिया भिगोकर चार घंटे बाद पानी को छानकर आँखें बंद करके चेहरा रोज़ाना 1-2 महीने तक लगातार धोयें। इससे चेहरे का कालापन, दाग और धब्बे दूर होकर चेहरा गोरा और सुन्दर हो जायेगा।

चोट के दर्द को दूर करे

चोट लग गई हो या चोट की वजह से नीला धब्बा बन गया हो, सूजन-दर्द होता रहा हो तो पीसे हुए धनिये और हल्दी दोनों को सामान्य मात्रा में मिलाकर, रसोई का तेल डालकर, इन दोनों को तवे पर अच्छे से भून लें। इसे चोट ग्रस्त अंग पर लेप करके, रूई लगाकर पट्टी से बाँध लें तो नीला धब्बा, सूजन, चोट का दर्द इस नुस्खे से थोड़े ही दिनों में ठीक हो जायेगा।

जल्द थकावट दूर करे

काम करते हुए थकावट आ गई हो, पैदल चलने से थकावट आ गई हो तो उसी समय सूखे धनिये के 20 दाने चबायें तो थकावट दूर हो जायेगी। यात्रा के दौरान इन बीजों को एक डिब्बी या किसी भी तरह रख कर ले जायें। साथ ही पैरों को घुटनों तक ठंडे पानी में डुबाये रखें या घुटनों से निचे पैरों तक ठंडा पानी डालें। तुरंत आपको राहत मिलेगी।

मिर्गी का आना बंद होगा

एक किलो पानी में 50 ग्रा. धनिया डालकर इतना उबालें कि तीन हिस्सा पानी बाकी रह जाए, फिर इसे छानकर स्वादानुसार नमक मिलाकर, इसके चार भाग करके रोज़ाना चार बार पिएं। इससे जल्द ही मिर्गी के दौरे आना बंद हो जाते हैं।

पुराने दस्त, इर्रिटेबल बाउल सिंड्रोम

लम्बे समय से दस्त होते रहे हैं, रोज़ाना ही पांच-छह बार पतले दस्त होते हैं, गैस बहुत निकलती है तो एक चम्मच साबुत बिना पिसा हुआ धनिया और एक चम्मच चीनी दोनों चबा-चबाकर खाएं और आखिर में पानी के साथ निगल जाएं। इससे दस्त व पेट के रोगों में लाभ होगा। रात को धनिया पानी में भिगोकर प्रातः पानी छानकर बुरा, शक्कर मिलाकर रोजाना पिएं।

सिर दर्द दूर भगाए

चार चम्मच धनिया और दो चम्मच मिश्री एक गिलास पानी में उबालकर आधा पानी रहने पर छानकर पिएं। इससे सर्दी-जुकाम से होने वाला सिर दर्द जल्द ही ठीक हो जायेगा। और अगर आपको छींक भी बहुत आती है तो सिर्फ धनिये के पत्ते सूंघे, इससे छींक आनी बंद हो जाएगी।

गंजेपन से छुटकारा

हरे धनिये की पत्तियों का रस लगाएं, रस से मालिश करें। बालों को रस में भिगोकर 15 मिनट बाद बाल धोएं। इससे बाल उगेंगे, बालों का गिरना बंद होगा, बाल मुलायम और काले होंगे।

कब्ज दूर करे

धनिया 10 चम्मच, हरड़ का चूर्ण एक चम्मच, काला नमक आधा चम्मच सबको मिलाकर खाने के बाद 2 चम्मच गर्म पानी से फांकी लें। पुरानी कब्ज वाले इसे लम्बे समय तक लें।

भूख न लगना

पिसा हुआ सूखा धनिया दो चम्मच एक गिलास पानी में उबालकर, छानकर इसमें टेस्ट के हिसाब से दूध व शक्कर डालकर पियें। इससे भूख अच्छी लगेगी। भूख बढ़ाने के लिए धनिया, कालीमिर्च, मिश्री, इलायची सब पिसे हुए थोड़ी-थोड़ी मात्रा में लेकर, थोड़े से घी में मिलाकर खाएं।

खाना न पचना

पिसा धनिया, पिसी मिश्री एक-एक चम्मच मिलाकर रोज़ाना दो बार पानी से फांकी लेने से अमाशय की दुर्बलता से अपच दूर हो जाती है।

रायपुर-छ.ग.। छत्तीसगढ़ शासन के संस्कृति विभाग, छ.ग. सिन्धी अकादमी एवं ब्रह्माकुमारीज़ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'रूहानी सिन्धी सम्मेलन' में ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी ब्र.कु. जयन्ती कृपलानी दीदी,लंदन, शदाणी दरबार रायपुर के उदय शदाणी, गोदड़ीवाला धाम की महन्त मीरादेवी खूबचन्दानी, छ.ग. सिन्धी अकादमी के अध्यक्ष राम गिडलानी, छ.ग. पूज्य सिन्धी पंचायत के अध्यक्ष श्रीचन्द सुन्दरानी, चेम्बर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष अमर पारवानी, क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. हेमलता दीदी, उज्जैन सम्भाग की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. उषा दीदी, ब्रह्माकुमारीज़ जयपुर की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. चन्द्रकला दीदी व अन्य गणमान्य लोगों सहित मुम्बई से आये लोकप्रिय सिन्धी गायक जतिन उदासी तथा शहर के अन्य कलाकार शामिल रहे।

सोमावल-महा.। विधायक राजेश दादा पाडवी को ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय से ग्लोबल सम्मिट का उपहार, प्रसाद व शॉल देकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. सरिता बहन।

अम्बिकापुर-छ.ग.। स्वच्छता के लिए श्रमदान विषय के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ एवं नगर पालिका निगम द्वारा आकाशवाणी चौक से लेकर पीजी कॉलेज रोड तक सफाई की गई जिसमें बड़ी संख्या में ब्र.कु. भाई-बहनें एवं शहर के गणमान्य नागरिक शामिल रहे।

पुणे-पिंपरी(महा.)। महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ मेडिटेशन सेंटर तथा पिंपरी चिंचवड महानगरपालिका की ओर से स्वच्छ भारत अभियान का आयोजन किया गया जिसमें पिंपरी चिंचवड कॉर्पोरेशन के कर्मचारी, ब्र.कु. भाई-बहनें, विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थी, कॉर्पोरेटर, समाजसेवी आदि शामिल रहे। ब्र.कु. सुरेखा बहन ने सभी को ईश्वरीय संदेश दिया तथा इस मौके पर सभी ने अपना परिसर स्वच्छ रखने की प्रतिज्ञा की।

पन्ना-म.प्र.। शिक्षक दिवस पर शिक्षाविदों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए सूर्य भूषण मिश्रा,जिला शिक्षा अधिकारी एवं उनकी धर्मपत्नी, श्रीमति निशा जैन,पूर्व प्राचार्य, श्रीमति शकुंतला बहन,प्राचार्य,ककरहटी, ब्र.कु. सीता बहन,सेवाकेन्द्र संचालिका तथा अन्य।

ग्वालियर-म.प्र.। नई दुनिया,दैनिक समाचार पत्र के संपादक वीरेन्द्र तिवारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रोशनी बहन।

• संकल्प शक्ति •

ब्र.कु. शिवानी बहन,
जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा

हम दिनभर में कार्यव्यवहार में आते सुबह से शाम तक न जाने कितने और कैसे-कैसे संकल्प हम करते रहते हैं। जिन पर हमारा कोई कंट्रोल नहीं होता। हम एक के बाद एक संकल्प की परत अपने मन पर चढ़ाते रहते हैं। जिस तरह से हर चीज़ की एक लिमिट होती है चाहे वो कंप्यूटर है, बैंक है, चाहे कोई भी मशीन है, हर एक की एक लिमिट होती है। उसी तरह से इस मन रूपी मशीन में भी संकल्प प्रोडक्शन की एक लिमिट है। किस तरह का मटेरियल हमें इसमें डालना है और कितना डालना है वो हमें ध्यान देना है।

हमारे संकल्प ही हमारे डॉक्टर

अगर घर में कोई बीमार होता है तो कौन-सी एनर्जी होनी चाहिए घर में? हीलिंग के लिए कौन-सी एनर्जी चाहिए? ये हमें पता है। जितना हमारे मन की स्थिति शांत होगी, शक्तिशाली होगी, सही सोच रही होगी, उतना घर की एनर्जी हाई हो जाएगी। वो जिनका शरीर बीमार है, उनका सिर्फ शरीर बीमार है, और शरीर पर किसका असर पड़ने वाला है? मन का। डॉक्टर का रोल क्या है, दवा और इलाज। लेकिन हमारा रोल क्या है? उनके मन की स्थिति को पॉवरफुल करना। उनके मन की स्थिति को ठीक करने के लिए हमें पहले अपने मन की स्थिति को पॉवरफुल बनाना पड़ेगा। हमारा मन नॉर्मल से भी ज़्यादा शक्तिशाली होना चाहिए। लेकिन हमने कह दिया कि वो बीमार है, तो चिंता होना तो नॉर्मल है, डर लगना तो नॉर्मल है, दु:ख होना तो नॉर्मल है।

घर में सबने चिंता, डर, दु:ख क्रियेट किया, फिर जो मिलने आये, उन्होंने भी चिंता ही ज़ाहिर की। इसलिए चिंता जताने वालों को बीमार व्यक्ति से मिलना ही नहीं चाहिए। हाँ, यदि कोई अंदर से पॉवरफुल थॉट क्रियेट करके जा सकता है, तो बस उन्हें ही जाकर मिलना चाहिए। सिर्फ ऊपर-ऊपर वाले शब्द नहीं चाहिए। हम हॉस्पिटल जाते हैं, लोगों से मिलते हैं, हम कहते हैं, कोई बात नहीं सब ठीक हो जाएगा और अंदर से सोचते हैं, क्या अचानक इस उम्र में ये बीमारी हो गई, बिचारे का अब क्या होगा, बच्चों को कौन सम्भालेगा? हम ये किधर की किधर दुआएं देकर चले आते हैं! ये हर विचार असर करते हैं।

इसलिए अपना ध्यान रखना है कि हम ऐसे टाइम पर कौन-सी ऊर्जा को आमंत्रित कर रहे हैं, जब हमें शक्ति की ज़रूरत है। ऐसे समय पर हमारी थॉट सिर्फ पॉज़िटिव होनी चाहिए। चिंता करना उस बीमारी को और बढ़ाता रहेगा और ठीक नहीं होने देगा। अगर ये याद रहे तो हम गलती से भी चिंता नहीं कर सकते, हम गलती से भी एक निगेटिव थॉट क्रियेट नहीं कर सकते। क्योंकि वो सबकुछ क्रियेट करके, उसपर असर डाल के हम डॉक्टर को कहते कि ये ठीक क्यों नहीं हो रहे! डॉक्टर कहते कि इलाज तो परफेक्ट ही चल रहा है। लेकिन हम दूसरे का उदाहरण देते कि वो तो चार दिन में ही ठीक हो गए थे, लेकिन ये क्यों नहीं ठीक हो रहे! क्योंकि उन्होंने इतनी ज़्यादा चिंता नहीं क्रियेट की होगी। आप किसी भी डॉक्टर से जाकर पूछियेगा, सेम बीमारी, सेम हॉस्पिटल, सेम डॉक्टर, सेम इलाज, अलग-अलग लोग अलग-अलग टाइम लगाते हैं ठीक होने में। क्योंकि उनको ठीक करने वाला एक फैक्टर है उनका मन और उनके परिवार का मन।

तो अगर कोई बीमार है तो कौन-सा इमोशन नॉर्मल है...। यहाँ तक कि ये शब्द बोलना भी कि... ये बीमार है, ये शब्द कौन-सी एनर्जी क्रियेट करेगा! अब दिन में पाँच थॉट ही क्रियेट कर दो कि ये बीमार है, फिर कोई आकर पूछे कि ये ठीक है, तो कहेंगे कि नहीं अभी भी दर्द है, तो कहेगा अच्छा अभी भी दर्द है, अभी भी ठीक नहीं हुए! ये कौन-सी दुआएं मिल रही हैं? फिर डॉक्टर को कहते कि पता नहीं अचानक कैसे मेरा दर्द बढ़ गया! क्योंकि इतने लोगों ने थॉट दिया था, दर्द है, दर्द है, दर्द है। अब इसका उल्टा क्रियेट करते हैं। जो हम संकल्प क्रियेट करते हैं वो वायब्रेट करते हैं। वो ऊर्जा है, संकल्प सिद्ध होते जाते हैं। अब अगर किसी के शरीर में थोड़ा कुछ है और हमें उन्हें ठीक करना है तो हमें कौन-सी थॉट देनी चाहिए? जो चाहते हैं कि ये हो, वही थॉट क्रियेट करना चाहिए।

जो दिख रहा है वो थॉट नहीं क्रियेट करना चाहिए। जब हम अपनी सोच से अपनी समस्या को बढ़ा सकते हैं तो अपनी सोच से ही उसे कम भी तो कर सकते हैं। लेकिन हम इस पॉवर को यूज़ करें ना फिर! - क्रमश:

मुम्बई-मुलुंड। ब्रह्माकुमारीज़ मुलुंड सबज़ोन द्वारा एन.के.टी. सभागृह,खारकर गली,ठाणे पश्चिम में प्रशासन से जुड़े लोगों के लिए 'प्रेरणादायक प्रशासन के लिए प्राचीन ज्ञान' विषय पर आयोजित एक विशेष ज्ञानवर्धक कार्यक्रम में ठाणे नगर निगम के अति. आयुक्त और ठाणे स्मार्ट सिटी लि. के सीईओ संदीप मालवी, ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासनिक सेवा प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, मुलुंड सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. गोदावरी दीदी, भांडुप सेवाकेन्द्र की संचालिका डॉ. ब्र.कु. लाजवंती बहन, एडवोकेट संदीप लेले,भाजपा महाराष्ट्र प्रदेश के सचिव, रोटरी क्लब के पूर्व अध्यक्ष अशोक महाजन, ठाणे नगर निगम के नगरसेवक मिलिंद पाटणकर, प्रशासनिक प्रभाग के मुख्यालय समन्वयक ब्र.कु. हरीश भाई, रोटरी इंटरनेशनल के पूर्व जिला गवर्नर डॉ. एशेज गांगुली, सामाजिक कार्यकर्ता डॉ. नानजी खिमजी ठक्कर, उ.प्र. के सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी राजयोगी ब्र.कु. सीताराम मीना, परिवार न्यायालय ठाणे के जिला न्यायाधीश शाम रुक्मे सहित अनेक प्रशासनिक अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

मुम्बई-घाटकोपर। 'अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस' पर बुजुर्गों के सम्मान हेतु आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में हैं राजयोगिनी ब्र.कु. नलिनी दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी, ब्र.कु. निकुंज,ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया विंग के राष्ट्रीय समन्वयक, ब्र.कु. विष्णु बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

नवी मुम्बई-वाशी। श्रमदान दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए विधायक गणेश नाईक, पूर्व विधायक संदीप नाईक, पूर्व नगरसेवक दशरथ भगत, राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, पूर्व नगर सेविका शिल्पा मोरे तथा अन्य गणमान्य लोग।

पुणे-रविवार पेठ(महा.)। विधायक मित्र मंडल द्वारा आयोजित दस दिवसीय गणेश उत्सव के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 'परमपिता शिव परमात्मा का अवतरण' विषय पर नाटिका का आयोजन कर जन-जन को परमात्म संदेश दिया गया। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रोहिणी दीदी ने श्री गणेश का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट किया और सभी को राजयोग मेडिटेशन का अनुभव भी कराया।

वर्धा-महा.। अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए इनर व्हील क्लब ऑफ गांधी सिटी वर्धा के अध्यक्ष गीता राऊत, सचिव सुषमा नागपुरे, वाइस प्रेसिडेंट सिंधु गोयंका, किरण साहू, अपर्णा बहन, रेनू बहन, रीना बहन तथा तृप्ति बहन।

परमात्म ऊर्जा

आप के तीन रूप कौन-से हैं? एक है ब्राह्मण रूप, जिससे स्थापना का कार्य करते हो। और दूसरा शक्ति रूप, जिससे विनाश का कर्त्तव्य करते हो और जगत माता व ज्ञान गंगा व अपने को महादानी, वरदानी रूप समझने से पालना करते हो। वरदानी रूप में जगत पिता का रूप आ ही जाता है। तो यह तीनों रूप सदैव स्मृति में रहें तो आपके कर्त्तव्य में भी वही गुण दिखाई देंगे। जैसे बाप को अपने तीनों रूपों की स्मृति रहती है, ऐसे चलते-फिरते अपने तीनों रूप की स्मृति रहे कि हम मास्टर त्रिमूर्ति हैं। तीनों कर्त्तव्य इकट्ठे साथ-साथ चाहिए। ऐसे नहीं स्थापना का कर्त्तव्य करने का समय अलग है, विनाश के कर्त्तव्य का समय और आना है। नहीं। नई रचना रचते जाओ और पुराने का विनाश करते जाओ। आसुरी संस्कार व जो भी कमज़ोरी है, उनका विनाश भी साथ-साथ करते जाना है। नये संस्कार ला रहे हैं पुराने संस्कार खत्म कर रहे हैं। कईयों में रचना रचने का गुण होता है, लेकिन शक्ति रूप विनाश कार्य रूप न होने कारण सफलता नहीं हो पाती। इसलिए दोनों साथ-साथ चाहिए। यह प्रैक्टिस तब हो सकेगी जब एक सेकण्ड में देही-अभिमानी बनने का अभ्यास होगा। ऐसे अभ्यासी सब कार्य में सफल होते हैं। अपने को महादानी व वरदानी, जगत माता व जगत पिता व पतित पावनी के रूप में स्थित होकर किसी भी आत्मा को अगर आप दृष्टि देंगी तो दृष्टि से भी उनको वरदान की प्राप्ति करा सकती हो। वृत्ति से भी प्राप्ति करा सकती हो अर्थात् पालना कर सकती हो। लेकिन इस रूप की सदा स्मृति रहे। ब्राह्मण कथा व ज्ञान सुना कर स्थापना तो बहुत जल्दी कर लेते हो, लेकिन विनाश और पालना का जो कर्त्तव्य है उसमें और अटेन्शन चाहिए। पालना करने के समय कल्याणकारी भावना व वृत्ति रख कर कोई भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा पर अपनी पालना से उनको उपकारी बना सकते हो। कैसी भी पतित आत्मा, पतित पावन के वृत्ति से पावन हो सकते हैं। अगर उनका पतितपना देखेंगे तो नहीं हो सकेगा। जैसे माँ कब बच्चे की कमज़ोरियों को व कमियों को नहीं देखती है, उनको ठीक करने का ही रहता है। तो यह पालना करने का कर्त्तव्य इस रूप में सदा स्थित रहने से यथार्थ चल सकता है। जैसे माँ में दो विशेष शक्तियां सहन करने की और समाने की होती है। वैसे ही हर आत्मा की पालना करते समय भी यह दोनों शक्तियां यूज़ करें तो सफलता ज़रूर हो। लेकिन अपने को जगत माता व जगत पिता के रूप में स्थित रह करेंगे तो। अगर भाई-बहन का रूप देखेंगे तो उसमें संकल्प आ सकता है। लेकिन माँ बाप के समान समझो। माँ बाप बच्चे का कितना सहन करते हैं, अन्दर समाते हैं तब उनकी पालना कर उसको योग्य बना सकते हैं। तो सदैव हर कर्त्तव्य करते समय अपने यह तीनों रूप भी स्मृति में रखने चाहिए। जैसी स्मृति, वैसा स्वरूप और जैसा स्वरूप वैसी सफलता।

नवी मुम्बई-वाशी। सेंट्रल रिज़र्व पुलिस फोर्स में वैभव निंबाळकर आईपीएस डीआईजीपी, चंद्रभूषण जी डीआईजीपी एवं खजान सिंह डीआईजीपी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शीला दीदी। साथ हैं ब्र.कु. मीरा बहन व ब्र.कु. नीलम बहन।

कथा सरिता

एक आदमी ने एक पेंटर को अपने घर बुलाया और अपनी नाव दिखाकर कहा कि इसको पेंट कर दो। उसने उस नाव को पेंट कर दिया लाल रंग से, जैसा कि नाव का मालिक चाहता था। फिर पेंटर ने अपने पैसे लिए और चला गया।

अगले दिन, पेंटर के घर पर वह नाव का मालिक पहुँच गया और उसने एक बहुत बड़ी धनराशि का चेक दिया उस पेंटर को। पेंटर भौचक्का हो गया, और पूछा - ये किस बात के इतने पैसे हैं? मेरे पैसे तो आपने कल ही दे दिये थे।

मालिक ने कहा- ये पेंट का पैसा नहीं है, बल्कि नाव में जो छेद था, उसको रिपेयर करने का पैसा है।

पेंटर ने कहा- अरे साहब, वो तो एक छोटा-सा छेद था, सो मैंने बंद कर दिया था। उस छोटे से छेद के लिए इतना पैसा मुझे ठीक नहीं लग रहा है।

मालिक ने कहा - दोस्त, तुम समझे नहीं मेरी बात। अच्छा मैं विस्तार से समझाता हूँ। जब मैंने तुम्हें पेंट के लिए कहा तो जल्दबाजी में तुम्हें ये बताना भूल गया कि नाव में एक छेद है उसको रिपेयर कर देना। और जब पेंट सूख गया, तो मेरे दोनों बच्चे उस नाव को समुद्र में लेकर नौकायन के लिए निकल गए। मैं उस वक्त घर पर नहीं था लेकिन जब लौट कर आया और अपनी पत्नी से ये सुना कि बच्चे नाव को लेकर नौकायन पर निकल गए हैं। तो मैं बदहवास हो गया। क्योंकि मुझे याद आया कि नाव में तो छेद है।

मैं गिरता-पड़ता भागा उस तरफ, जिधर मेरे प्यारे बच्चे गए थे। लेकिन थोड़ी दूर पर मुझे मेरे बच्चे दिख गए, जो सकुशल वापिस आ रहे थे। अब मेरी खुशी और प्रसन्नता का आलम तुम समझ सकते हो।

फिर मैंने छेद चेक किया तो पता चला कि मुझे बिना बताये तुम उसको रिपेयर कर चुके हो। तो मेरे दोस्त उस महान कार्य के लिए तो ये पैसे भी बहुत थोड़े हैं। मेरी औकात नहीं कि उस कार्य के बदले तुम्हें ठीक-ठाक पैसे दे पाऊं।

जीवन में 'भलाई का कार्य' जब मौका लगे हमेशा कर देना चाहिए। भले ही वो बहुत छोटा-सा कार्य ही क्यों न हो। क्योंकि कभी-कभी वो छोटा-सा कार्य भी किसी के लिए बहुत अमूल्य हो सकता है।

छोटा कार्य भी बनाता महान

राजगढ़-म.प्र.। शिक्षक दिवस के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में शिक्षकों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में शिक्षकगण एवं ब्रह्माकुमारीज़ की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु दीदी।

रीवा-देवतालाब(म.प्र.)। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. लता बहन।

मुम्बई-घाटकोपर। अभिनेता,फिल्म निर्माता और उद्यमी जैकी भगनानी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ घाटकोपर सबज़ोन की अतिरिक्त निर्देशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी।

गुवाहाटी-असम। महामहिम राष्ट्रपति श्रीमति द्रौपदी मुर्मू से राष्ट्रपति भवन में मुलाकात कर आध्यात्मिक चर्चा करने के साथ ही ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा देश के उत्तर पूर्व क्षेत्र में चल रही ईश्वरीय सेवाओं की जानकारी देते हुए असम, मणिपुर, मिजोरम, अरुणाचल एवं त्रिपुरा के ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्रों की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी। साथ हैं मणिपुर सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. नीलिमा, न्यू गुवाहाटी सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मौसमी, ब्र.कु. कराबी, ब्र.कु. सुनीता तथा ब्र.कु. मणिदीप शर्मा।

राजकोट-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत 'नशा मुक्त भारत' की थीम पर 100 फीट का लार्ज चित्र बनाया गया था। जिसमें छः साल के बच्चे से लेकर 75 वर्ष की आयु तक के 24 लोगों ने उमंग-उत्साह से भाग लिया और 3 घंटे में यह चित्र पूरा हुआ था। इस प्रयास को इंडिया स्टार वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भारती दीदी को इसका सर्टिफिकेट प्रदान किया गया।

जैसा निश्चय, वैसा होगा स्वरूप...

- राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

विदेही बनने के लिए हमेशा यह सोचो कि मैं फरिश्ता हूँ। चलते-फिरते, उठते-बैठते इसी चाल से चलो। आप जानते होंगे, शेर कैसे चलता है, बिल्ली कैसे चलती है और चूहा कैसी चाल चलता है। हरेक पशु की चाल उसके निश्चय के मुताबिक है। चूहा ऐसा क्यों चलता है? क्योंकि उसका निश्चय ही ऐसा है। उसको पता है कि आदमी मुझे पकड़ने आयेगा, मुझे बिल में घुस जाना है। जायेगा फटाफट-फटाफट, देखेगा इधर-उधर, कोई आ तो नहीं रहा है पीछे से। जहाँ देखेगा बिल, उसमें घुस जायेगा। उसकी चाल-ढाल सब ऐसी है। क्योंकि उसके मन में रहेगा कि मैं पकड़ा जाऊंगा, मुझे पकड़ने वाले लोग बहुत हैं। मुझे छिपके ही काम करना है। उसकी चाल उस तरह से होती है। हाथी की चाल मस्त है, वह समझता है कि मैं तो बड़ा शक्तिशाली हूँ। मेरा कोई क्या कर सकता है! देखिये वह कैसे चलता है। ऊँट को देखिये, उसकी चाल अलग है। हरेक पशु की चाल अलग-अलग है। किसी ने कहा कि व्यक्ति को पहचानना है तो उसकी गुफ्तार(बोलचाल), रफ्तार(चलने का ढंग) और दस्तार(पगड़ी) देखो। इन तीन चीज़ों से व्यक्ति को पहचान सकते हैं। इसी प्रकार से, हरेक व्यक्ति का जो निश्चय है कि मैं फरिश्ता हूँ, मैं फरिश्ता हूँ, मैं फरिश्ता हूँ, उसके आधार पर उसकी स्थिति बनती है। एक पूरा दिन आप 'मैं फरिश्ता हूँ' यह सोचकर देखो, आप उड़ने लगेंगे। अगर एक पूरा दिन आपने सोचा कि मैं मोटा आदमी हूँ, मैं भारी आदमी हूँ, उस दिन की अपनी अवस्था भी देख लो। आपको बहुत भारी देह-अभिमान होगा। यह एक स्मृति है, जागृति है कि मैं फरिश्ता हूँ। इसी को बाबा कहते हैं कि लाइट के कार्ब में अपने आपको समझो। अपने को उस स्वरूप(लाइट के कार्ब) में देखो या तो योगी के स्वरूप में देखो कि कमल आसन पर बैठ परमात्मा से मिलन की लगन में मगन हूँ, परमात्मा की याद का आनन्द ले रहा हूँ। उसमें तल्लीन हूँ- इस स्वरूप में देखो। जैसा आप अपने को देखोगे या अपने बारे में समझोगे, जैसा दृश्य या रूप बनाओगे वही आपका दर्शन है, जीवन दर्शन है, फिलॉसफी है। फिलॉसफी को भी दर्शन कहते हैं। आप अपने को कैसे देखते हैं- यही आपका जीवनदर्शन है। बाबा कहते हैं कि आप अपने को यह समझो कि मैं फरिश्ता हूँ, जिससे आपको याद आयेगा कि फरिश्ता किसको कहते हैं, फरिश्ता क्या काम करता है, फरिश्ता क्या नहीं करता। दूसरा है, मैं लाइट हूँ, मैं माइट हूँ। अपने को बार-बार स्मृति दिलाओ कि मैं लाइट हूँ, मैं माइट हूँ। इससे ही हमारी विदेही अवस्था, लाइट और माइट की अवस्था होगी।

जैसा आप अपने को देखोगे या अपने बारे में समझोगे, जैसा दृश्य या रूप बनाओगे वही आपका दर्शन है, जीवन दर्शन है, फिलॉसफी है। फिलॉसफी को भी दर्शन कहते हैं। आप अपने को कैसे देखते हैं- यही आपका जीवनदर्शन है।

तीसरा है, विकर्म विनाशक अवस्था। इसके लिए बाबा ने कहा है कि तपस्या करो। हमारे ऊपर 63 जन्मों के विकर्मों का बोझ है। इसलिए बाबा कहता है कि विकर्म विनाशक अवस्था को धारण कर विकर्मों को भस्म करो। बच्चे, इसके लिए ओना होना चाहिए, फुरना होना चाहिए। बाबा कहते हैं कि तपस्या करो, तपस्वी कुमार बनो। साधन नहीं, साधना करो। ज़्यादा साधन इकट्ठे करने की कोशिश मत करो। साधना के ऊपर ध्यान दो। सिद्धि जो होगी साधनों से नहीं होगी, साधना से होगी। बाबा कहते हैं कि इस अवस्था को पाने के लिए किसी भी वस्तु, व्यक्ति और वैभव से लगाव न हो, झुकाव न हो। फरिश्ते बनने के लिए, विदेही बनने के लिए ये लगाव और झुकाव ज़ंजीरें हैं। ये उड़ने नहीं देंगे, ये बाधा हैं। चौथी बात है, अपने को समझें कि मैं पॉवर हाउस हूँ। दूसरों को भी लाइट और माइट देने वाला हूँ। मेरे नेत्र जो भी देखें, मेरी वाणी जो भी सुनें, मेरे सम्बन्ध-सम्पर्क में जो भी आयें, उनको शक्ति, करेंट मिलना शुरू हो जाये।

पांचवी बात है, एक बाप दूसरा न कोई। इस अवस्था से ही हमारे में सत्यता की शक्ति आयेगी। बाप सत्य है, उस एक के बनके रहने से ही हमारे में वह शक्ति आयेगी। एक बाप दूसरा न कोई, इससे हमारी विकर्म विनाशक अवस्था होगी। जब तक हमारा जीवन इस पर नहीं टिका है, वह विकर्म विनाशक अवस्था नहीं होगी। हल्के-सल्के अनुभव होंगे लेकिन शक्तिशाली अवस्था, शक्तिशाली अनुभव नहीं होंगे।

भोपाल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ की वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी को एलएनसीटी यूनिवर्सिटी भोपाल द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गई। यह उपाधि उन्हें स्कूल ऑफ जर्नलिज़्म एवं मास कम्यूनिकेशन द्वारा 'कोविड 19 के दौरान भारत में सकारात्मकता को प्रचारित करने में आध्यात्मिक संचार की भूमिका का अध्ययन' पर शोध के उपरांत प्रदान की गई। उन्होंने अपना शोध एलएनसीटी यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ जर्नलिज़्म एवं मास कम्यूनिकेशन की विभागाध्यक्ष डॉ. अनु श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में किया।

शांतिवन। प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री मधु शाह को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. दिलीप भाई। साथ हैं ब्र.कु. ईश्वर भाई।

राजगढ़-म.प्र.। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश रत्नेश चंद्र सिंह बिसेन एवं श्रीमति बिसेन को उनके निवास पर रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारीज़ की जिला प्रभारी ब्र.कु. मधु दीदी, ब्र.कु. सुरेखा बहन एवं बिजली विभाग के सब इंजीनियर रामेश्वर दांगी।

परभणी-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा स्वच्छता अभियान के अंतर्गत आयोजित साफ-सफाई कार्यक्रम में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रणिता बहन, नगर परिषद के मुख्याधिकारी पॉळ जी, न.प. स्वच्छता प्रमुख उत्तम कांबळे, न.प. पाणी पुरवठा अभियंता गुट्टे जी, ब्र.कु. सोनल बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

अम्बिकापुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेन्द्र पर नवा बिहान जागरुकता अभियान एवं परामर्श केंद्र से जुड़े सामाजिक संगठनों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं की टीम ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विवेक शुक्ला के स्थानांतरण होने पर उन्हें सम्मानित कर विदाई दी। इस अवसर पर वरिष्ठ समाजसेवी मंगल पाण्डेय, वरिष्ठ समाजसेविका वन्दना दत्ता, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. विद्या दीदी, समाजसेवी कवि संतोष सरल, वरिष्ठ समाजसेवी अजय तिवारी, उप पुलिस अधीक्षक शुभम तिवारी, समाजसेवी अंचल ओझा, युवा समाजसेवी अनिल कुमार मिश्रा, उमाशंकर पाण्डेय, सरस्वती तिवारी, अमृता जायसवाल, सुनिधि शुक्ला, रणधीर सिंह, अमृत प्रधान, राकेश शर्मा, रजत तिर्की सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

भावना के पीछे की भावना

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

आज बहुत सारे समझदार भगवान के बच्चे हैं। जिन्होंने अपने पूरे जीवन को भगवान के कार्य में समर्पित किया है। चाहे घर में हैं, चाहे सेवाकेन्द्रों पर समर्पित होकर सेवा कर रहे हैं। या फिर अन्य स्थानों से परमात्मा के कार्यों में संलग्न हैं। जब सभी की बातों को हम सुनते हैं, ध्यान से देखते हैं तो पाते हैं कि इनकी भावना और बुद्धि दोनों के बीच में बहुत बड़ा अन्तर है। सभी भावनाओं के कारण अपनी बात किसी के सामने रख नहीं पाते कि शायद इनको बुरा लग जायेगा। लेकिन पीछे हम ये भी बात करते हैं कि हम इनके लिए इतनी भावना रखते हैं कि मेरी बात समझ नहीं पाते। इनसे बात कहना भी है और चुप रहना भी है। सहन भी करना है और परेशान भी रहना है। तो फिर समझ में नहीं आता कि ये ज्ञान फिर हमको कहाँ से ताकत दे रहा है, या कितनी ताकत दे रहा है! क्योंकि जब मैं किसी के सामने अपनी बात को रख नहीं पा रहा हूँ तो मैं कैसा ज्ञानी हूँ, कैसा योगी हूँ? क्योंकि ज्ञान और योग इस बात पर डिपेन्ड करता है कि किस हद तक आप अपने आपको स्पेस देते हैं, खुलापन देते हैं क्योंकि जो जितना खुलेपन के साथ जियेगा उतना हल्का रहेगा।

ये जो आज का विषय है इसी को लेकर चल रहा है कि हम सबको एक बात अच्छी तरह से समझ लेनी है कि जब तक आप छोटी-छोटी बातों की, छोटे-छोटे मलाल, छोटे-छोटे दर्द, जो हमको किसी न किसी तरह से डिस्टर्ब कर रहे हैं, उसको चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बड़ा क्यों न हो उनके सामने न कह पाना हमारी बहुत बड़ी कमज़ोरी है। इस डर से न कह पाना कि बुरा लग जायेगा, बल्कि मैं किसी और कारण से डर रहा हूँ कि कहीं इनके मन में मेरे लिए कोई ऐसी बात न आ जाये। मतलब कहने का भाव ये है कि जो हमारा दुनिया में एक डर था कि किसी से कुछ प्राप्ति हो रही है या इसको दूसरे भाव में कहें तो जहाँ से कुछ मिल रहा है तो उसका सहना भी पड़ता है।

कोई भी हो जब तक इस डर के साथ जियेगा, इस भय के साथ जियेगा तो वो कभी भी स्वस्थ नहीं रह सकेगा। न मानसिक रूप से और न ही शारीरिक रूप से। इसीलिए जो कुछ भी आपके अन्दर है, जिसके लिए भी है, भावना को साइड में रखें, बुद्धि और भावना दोनों का बैलेन्स बनाकर बात को उस व्यक्ति के सामने रखने की कोशिश करें ताकि आप उन बातों से फ्री हो जायें जिनसे आपको डर लगता है।

लेकिन क्या हम सहके स्थूल चीज़ों से आजतक खुश हो पाये? हमको तो हमेशा स्थूल के साथ सूक्ष्म चाहिए होता है ना और ये सुख ही आज व्यक्ति को दु:खी कर रहा है। स्थूल रूप से तो सबके पास सब आ रहा है लेकिन जो सूक्ष्म है वो किसी को मिल नहीं पा रहा है जैसे खुलापन, अपनी बात रखने की ताकत आदि-आदि। अरे, हम भगवान के बच्चे हैं सो बात आ भी जायेगी तो क्या हुआ? हमारे मन में ये भी डर होता है कि कहीं वो हमें अपने से दूर न कर दें, वो मेरे बारे में क्या सोचेंगे कि मैं ऐसा सोचता हूँ या सोचती हूँ, ऐसे बहुत से छोटे-छोटे डर के कारण हम अपनी भावना और अपनी बात को पूरी तरह से कह नहीं पाते। इसको अगर दूसरे शब्दों में कहा जाये तो हम बात को कहना तो चाहते हैं लेकिन बात कहने की ताकत हमारे अन्दर नहीं है।

आप सोचो कि हम अपने आपको कितना कमज़ोर करते जा रहे हैं। इन छोटे-छोटे डर के कारण चाहे कोई घर में रहने वाला हो, चाहे सेन्टर निवासी हो, चाहे बाहर कहीं किसी कम्पनी में काम कर रहा हो, कोई भी हो जब तक इस डर के साथ जियेगा, इस भय के साथ जियेगा तो वो कभी भी स्वस्थ नहीं रह सकेगा। न मानसिक रूप से और न ही शारीरिक रूप से। इसीलिए जो कुछ भी आपके अन्दर है, जिसके लिए भी है, भावना को साइड में रखें, बुद्धि और भावना दोनों का बैलेन्स बनाकर बात को उस व्यक्ति के सामने रखने की कोशिश करें ताकि आप उन बातों से फ्री हो जायें जिनसे आपको डर लगता है। और ये स्व परिवर्तन में सबसे बड़ी बाधा है आज। क्योंकि हम ऊपर-ऊपर से बस सबका सम्मान करते हैं अगर अन्दर से रिस्पेक्ट, सच्चाई-सफाई होती तो हम कभी भी डरते नहीं। और आज इन्हीं सब कारणों की वजह से, इन छोटे-छोटे डर की वजह से बड़े-बड़े रोगों का सामना करना पड़ता है। चाहे मैं भी हूँ, ये हम सबके लिए है। अगर मुझे किसी भी बात में थोड़ा भी ऐसा लग रहा है तो हमें अपनी बात स्पष्ट रूप से उनके सामने रखनी चाहिए। इस भावना से रखनी चाहिए कि ये बात समझेंगे। इस बात को कहकर मैं कम से कम हल्का या हल्की तो हो जाऊंगी ना!

तो इस विषय को थोड़ा गम्भीरता से लेकर हम सभी इस पर सोचें। अपने आपके परिवर्तन में इस कड़ी को ज़रूर जोड़ें। इससे आपका जीवन भी अच्छा हो जायेगा। और आपका शरीर भी स्वस्थ होगा, वातावरण भी बहुत हल्का होगा तो वायब्रेशन भी बहुत अच्छे होंगे। तो इस तरह से भावना से ऊपर उठ कर, बुद्धि का बैलेन्स बनाकर अपने आपको फ्री करें उन सारी बातों से, जिनसे हमें दर्द या कष्ट होता है।

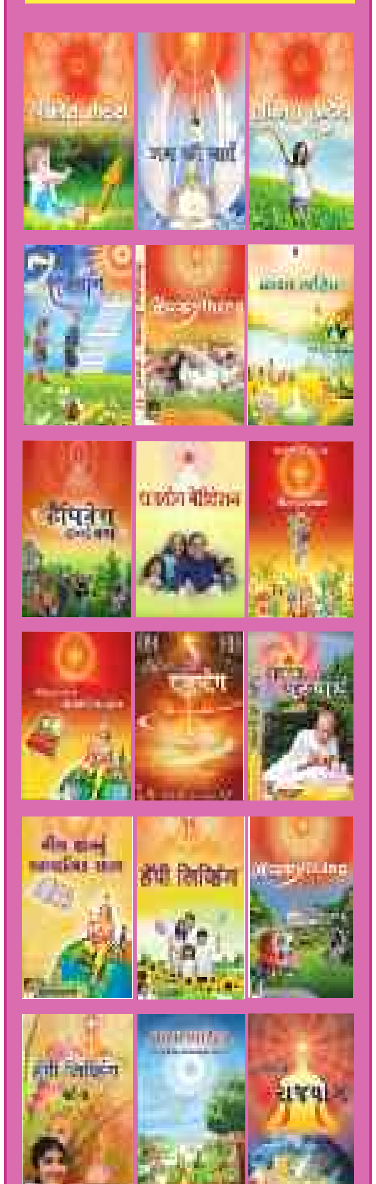

मन की बातें

- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मैं इंदौर से हूँ। मैं पिछले 6 महीने से राजयोग से जुड़ी हूँ। लेकिन कुछ समय पहले किसी ज्योतिषी ने मुझे कहा कि मेरे मेडिटेशन करने से या पूजा करने की वजह से मेरे घर की स्थिति, बच्चों का करियर और फाइनेंशियल प्रॉब्लम्स आ रही हैं। ये कैसे पॉसिबल है कि ईश्वर की भक्ति करने पर भी किसी को ये सब प्रॉब्लम्स हो सकती हैं, क्या ग्रहों की बातें सही होती हैं? या मेरा बाबा सही है, कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर : ज्योतिषी विद्या तो बहुत सुन्दर है मैं इसको परफेक्ट विद्या मानता हूँ। नॉर्मली तो जब ग्रहों का बुरा प्रभाव होता है तो लोग भक्ति, पूजा पाठ करते हैं। अच्छी चीज़ों का परिणाम अच्छा ही होगा। अगर किसी ग्रह से निगेटिव एनर्जी भी आ रही है और आप मेडिटेशन कर रही हैं या किसी भी तरह की अच्छी चीज़ें भी कर रही हैं तो आपके पॉज़िटिव वायब्रेशन, निगेटिव वायब्रेशन्स को खत्म कर देंगे। इसलिए आपको ऐसा बिल्कुल भी नहीं सोचना चाहिए। और मन से ये भय निकाल देना चाहिए क्योंकि अगर आपको भय रहेगा कि कहीं ऐसा न हो जाये तो आपके भय के वायब्रेशन वैसा ही क्रियेट करेंगे। इसलिए बाबा ने एक बार एक माता को, जब उसके गुरु ने उसको श्राप दिया था कि कीड़े पड़ेंगे तुमको, तुम तड़प-तड़प कर मरोगी। और वो बहुत भयभीत हो गई थी। उसने बाबा से पूछा था कि गुरु ने ऐसा श्राप दे दिया तो बाबा ने कहा था कि बच्ची सोचोगी तो होगा। नहीं सोचोगी तो कुछ नहीं होगा। इसीलिए आप भी ऐसा ही करें।

प्रश्न : मेरा नाम कमल है। मैंने व्यर्थ चीज़ों का, फेसबुक और इंटरनेट आदि का भी त्याग कर दिया है। मेरा प्रश्न ये है कि क्या मैं 108 की माला में आ सकता हूँ? उसके लिए मुझे कुछ भी करना पड़े मैं तैयार हूँ। इसके लिए मुझे कैसे अच्छे से अच्छा पुरुषार्थ करना चाहिए?

उत्तर : आपका बहुत अच्छा इंटेंशन है। आपका त्याग निष्फल न जाये। आपका त्याग आपको श्रेष्ठ तपस्वी बना देगा। सत्य ये है कि जब भगवान इस धरा पर आये थे पूर्व कल्प में उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान देकर, सहज राजयोग सिखाकर मनुष्यों को माया पर विजय प्राप्त करने का मार्ग दिखाया था। उसमें से 108 मनुष्यात्माओं ने माया पर सम्पूर्ण रूप से विजय प्राप्त कर ली थी। उनकी यादगार में ये वैजयन्ती माला है। वैजयन्ती माना अन्त में विजय। मैं आपको कहूँगा कि विजय माला में आप अपना नम्बर फिक्स कर दें 60 या 80 नम्बर। और फिक्स करके रोज़ विज़न बनाओ कि विजय माला में मेरा ये नम्बर होगा। और विशेष रूप से आपको लक्ष्य बनाकर रोज़ 8 घंटे प्रतिदिन योगाभ्यास करना है। कुछ बैठकर, बाकी कर्म में। आपको रोज़ एक विधि अपनानी है कि मैं सूक्ष्म लोक में हूँ और सामने बापदादा हैं। बिल्कुल क्लियर विज़न हो। ब्रह्मा बाबा के मस्तक में ज्योति जग रही है, वो दृष्टि दे रहे हैं फिर उन्होंने अपना वरदानी हाथ मेरे सिर पर रख दिया। तिलक लगाया और वरदान दिया मेरे बच्चे विजयी भव! सफलतामूर्त भव! श्रेष्ठ योगी भव! बस हम स्वीकार कर लें इन्हें। हमें नशा हो जाये तो ये प्रैक्टिकल अनुभूति में आने लगेंगे।

प्रश्न : मैं ब्र.कु. राजेश हूँ। मैं कुमार हूँ। मैं कुछ वर्षों से ज्ञान में हूँ। मैं ये जानना चाहता हूँ कि ब्रह्मा बाबा ने ऐसा क्या पुरुषार्थ किया जो सबकुछ भूल जाते थे, हम नहीं भूल पाते। जब कोई व्यक्ति गलती करता है तो दु:ख देता है, बार-बार क्रोध करता है या फिर कुछ ऐसा करता है जो अन्दर घुस जाता है तो ये सब बातें उसके सामने आने पर याद आती हैं,इससे ज़्यादा तकलीफ होती है जिससे वो बातें बार-बार अन्दर खाती रहती हैं। हम फॉरगिव तो कर देते हैं लेकिन फॉरगेट करना मुश्किल लगता है। कृपया कुछ युक्तियां बतायें।

उत्तर : मनुष्य भूल उन्हें नहीं पाता, जिनको मनुष्य ने बहुत ध्यान से सुन लिया और ले लिया, एक्सेप्ट कर लिया। जो व्यक्ति बहुत सेंसिटिव होते हैं वो हर चीज़ को अन्दर लेते हैं। और जो व्यक्ति बहुत लाइट है वो आपस में हँसते-बोलते मैंने कुछ कहा, उसने कुछ कहा, और बात वहीं खत्म हो गई। बल्कि ऐसी बातों से, और पिछली बातें भी खत्म हो जाती हैं। तो मनुष्य को हर बात को लाइटली लेना चाहिए। आपने बाबा की बात पूछी है। बाबा तो इस संसार में सबसे बड़े योगी थे ना। शुरू से ही उन्हें ईश्वरीय नशा चढ़ गया था। अब अन्दर में समा ही कुछ और लिया हो तो दूसरी बातों के लिए जगह ही कहाँ बचती है! जिसने अपनी बुद्धि में भगवान को बिठा लिया हो उसकी बुद्धि में और किसी चीज़ को बिठाने का स्थान ही कहाँ बचता है। तो बाबा तो महान तपस्वी थे, श्रेष्ठ स्वमान में स्थित थे, सॉल कॉन्शियस होने की उन्होंने बहुत ज़्यादा प्रैक्टिस की थी। और वो बड़े थे, ये दूसरी चीज़ है कि हम भी घर में अगर बड़े हों तो घर में छोटी-छोटी बातों को महसूस नहीं करेंगे। एक व्यक्ति का कारोबार करोड़ों में चल रहा हो और उसे पचास-सौ रूपये का नुकसान हो रहा हो तो वो थोड़ा ही उसपर कुछ सोचेगा, उसके लिए टाइम देगा। अकाउंट देखो ठीक से कि ये पचास रूपये क्यों नहीं आये हैं। तो हम बड़े, बातें बहुत छोटी। बाबा को तो फीलिंग थी ना कि मैं ब्रह्मा हूँ, ग्रेट-ग्रेट ग्रैंड फादर। ये सब मेरे बच्चे हैं। ऐसा नहीं है कि बाबा को कोई कुछ नहीं बोलते थे, बाबा की इंसल्ट करने वाले भी बहुत होते थे। लेकिन बाबा कहता था कि ये सब मेरे बच्चे हैं, कोई बात नहीं। मैं तो बाप हूँ ना! बाप को तो सुनना ही होता है। अपने आपको बहुत ऊंचा उठा दिया और बातों का लेवल बहुत छोटा हो गया। तो वो अन्दर जाती ही नहीं थी। बस यही टेक्निक हमको अपनानी है। बाबा की तरह अच्छे स्वमान में रहेंगे तो क्षमा करना भी सहज हो जायेगा। और साथ-साथ और चीज़ें भी भूलती जायेंगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

वरिष्ठ
राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

बुद्धिमानी से हर बात को समझें...

आबू... विश्व के लिए लाइट हाउस

बाबा ने बहुत पहले से कह दिया था कि जब अन्त आयेगा, प्रकृति के पाँचों तत्व वार करेंगे, पाँचों विकार वार करेंगे, और भटकती हुई आत्माओं के भी बहुत वार होंगे। प्रकोप होंगे, वो भ्रमित करेंगे लोगों को। मेरे पास रोज़ फोन आ जाता है किसी न किसी भाई-बहन का, वो कहते हैं कि बाबा तो हमसे रोज़ बातें करता है तो मैंने पूछा कि क्या बातें करता है बाबा, उन्होंने बताया कि बाबा ने कहा कि मुरली सुनने न जाया करो, मैंने पूछा कि तो आपने क्या किया? तो बोले कि मैंने जाना बंद कर दिया क्योंकि श्रीमत मिल गई। मैंने कहा कि भोली, बाबा जो रोज़ कहता है, भगवान रोज़ कहता है कि मुरली सुनो, तो वो कहेगा क्या कि मुरली न सुनो! दूसरे का आया कि बाबा मेरे कान में बहुत बात करता है पर पता नहीं मुझे उसके बाद डर क्यों लगता है? मैंने कहा भटक जाओगे, असली योग सीखो। ये खेल चल रहा है भारत में भी, कम से कम दस जगह इस तरह से बाबा के आने का खेल चल रहा है। ये बाबा नहीं होता, पहचानें इसे।

बाबा के रूप में माया बहुतों को आती है। बाबा ये बात कहते थे, अब ये प्रकोप बढ़ता जा रहा है। जहां-तहां आत्मायें भटक गई हैं। बाबा आ रहा है, बाबा आ रहा है। बाबा शब्द ही ऐसा है जिसमें बड़ा आकर्षण है, जिसकी तरफ लोग खींच कर चले जाते हैं। मैं आपको बताऊं, जब अव्यक्त हुए बाबा, मैंने पहले दिन से ही अव्यक्त पार्ट देखा है। बाबा जब अव्यक्त हुए और पहली बार 21 जनवरी को बाबा का आगमन हुआ गुल्ज़ार दादी के तन में। किसी को पता नहीं था कि बाबा आयेगा, बाबा को तो भोग लगाया था। बाबा ने सारे यज्ञ की व्यवस्थायें दीं। ऐसे-ऐसे चलेगा यज्ञ। क्योंकि सब सोच रहे थे कि अब क्या होगा! फिर बाबा ने कहा कि बापदादा आते रहेंगे जिनको निमित्त आत्मायें नियुक्त करेंगी। निमित्त माना दीदी थी मनमोहिनी और दादी प्रकाशमणि जी। जिनको ये दोनों आत्मायें नियुक्त करेंगी उनके तन में बापदादा आयेंगे। वही चलता रहा।

तीसरे रथ की तो बात ही नहीं। लोग हमसे पूछते अवश्य थे कि तीसरा रथ बाबा क्यों नहीं ले सकता। मैं तो ये स्पष्ट जानता हूँ कि बाबा के आने का पार्ट पूरा हो गया। अब वो कुछ बच्चों को ऐसा तैयार कर रहा है जो जयजयकार करेंगे बाबा की। जिनके द्वारा जयजयकार होगी, प्रत्यक्षता होगी। सोच लो ज़रा। बुद्धिमान आत्माओं से बात कर रहा हूँ। भगवान ने जो यज्ञ रचा है उसे छोड़ कर वो भला बाहर क्यों जायेगा! विचार कर लेना। आबू महान तीर्थ बनना है। आबू प्रसिद्ध होगा, लाइट हाउस बनेगा या कोई और जगह! भगवान कोई छोटी-मोटी हस्ती थोड़े ही है। कई लोग ये भी कह देते हैं कि अगर बाबा गुल्ज़ार दादी के तन में आ सकता है तो इसके तन में क्यों नहीं! गुल्ज़ार दादी सात जन्म की परमपवित्र आत्मा, सर्वश्रेष्ठ योगी, निर्मल, सरलचित्त, जिसका ब्रेन पॉवरफुल। भगवान किसी ऐसे-वैसे के ब्रेन में कैसे आ सकता है भला! वो सहन ही नहीं कर पायेंगे, ब्रेन ही फट जायेगा। तो सभी थोड़ा-सा भ्रमित न हों। बहुतों के तन में बाबा आते हैं, उनके तन में बहुत छोटी आयु से ही आत्माओं का प्रवेश होता रहता था, वो माध्यम थे आत्माओं के। अब उन्होंने कहना शुरू कर दिया, शिव बाबा आते हैं। एक्टिंग भी वैसी ही करते हैं। मुरलियां तो हैं ही। कुछ भी सुना देते हैं लेकिन भटक जायेंगी आत्मायें। और फिर एकदम हवा निकल जायेगी। फिर सब सोचेंगे ये क्या हो गया।

हमने देखा था कई साल पहले महाराष्ट्र में एक हेमंत कुमार जी थे, शोर हो गया बाबा आता है उनके तन में। मधुबन में तो आता नहीं चलो, ये मधुबन क्या है। और आठ टीचर्स भी चली गईं। डांस हो रहा है, रास हो रहा है कोई ने बड़ी जगह भी दे दी। 2 मास में हवा निकल गई। आठों का जीवन बर्बाद हो गया। किसी ने सुसाइड कर लिया, किसी ने शादी कर ली। कोई घर में जा बसी। रोते रहते हमने क्या कर दिया! पहचाना नहीं भगवान को। सोचो! बाबा तो कहता है मुझे तीन पैर पृथ्वी भी नहीं मिलती। और वो कह रहे हैं कि अभी किसी ने 7 एकड़ दे दी, किसी ने ये कर दिया, किसी ने वो कर दिया। आत्मायें ये काम ज़रूर करा देती हैं। परमात्मा का ये काम नहीं होता। ब्रह्मा का ये काम नहीं होता है। वो इस सृष्टि को जो इस सृष्टि के नियम हैं वो उस अनुसार चलने देता है। विचार करना इन बातों पर भला सोचो, भगवान इतना सस्ता है क्या!

> विश्व में एक ओर हाहाकार है और दूसरी ओर परमात्मा का दिव्य कर्तव्य चल रहा है। परमात्मा हमें नई दुनिया जहाँ सुख, शांति व समृद्धि का वर्षा देकर नये युग की ओर ले जा रहा है। ये समझना और अपने भाग्य की लकीर को बढ़ाना यही बुद्धिमानी है।

आत्माओं का प्रकोप बुरी तरह से संसार को अपनी चपेट में ले रहा है ये बाबा ने बहुत पहले कह दिया था। हाँ, कोई अच्छी आत्मायें भी होती हैं, सभी बुरी नहीं होती। कोई ज्ञानी आत्मा भी हो सकती है, किसी कारण उसको शरीर नहीं मिला हो, एक्सीडेंटल डेथ हो गई हो, कुछ और हो गया हो। ऐसी आत्माओं के पास ज्ञान भी होता है और ऐसे देखा भी होता है, वो भी अपना पार्ट प्ले कर सकती हैं।

ठीक है मैं आप सभी को यही कहूँगा कि बुद्धिमान बनें अपना भाग्य बनायें। भटकते वो हैं जो असंतुष्ट हैं, भटकते वो हैं जिनको किसी न किसी से ईर्ष्या, द्वेष रहती है। जो समझते हैं कि हमारी यहाँ तो कोई वैल्यू नहीं है पर वो ये नहीं सोचते कि जिस यज्ञ ने तुम्हें पाल-पोस कर बड़ा किया उस यज्ञ को तुम छोड़ कर जा रहे हो, सोच लो अंजाम। मैं बस इतना कहूँगा भारत स्वतंत्र है कोई कहीं भी जा सकता है, ना मैं मना कर सकता हूँ, ना यज्ञ और न ही कोई और। लेकिन एक ही नुकसान होगा कि बाबा की दृष्टि ऐसी आत्माओं से हट जायेगी। प्रचार भले ही वो कितना ही कर लें, अब तो वो बाबा के यज्ञ में जयजयकार होने वाली है। ये परीक्षाओं का समय है अपने को स्ट्रॉन्ग बनाना है। और कहीं भी भ्रमित नहीं होना है ताकि आप बाबा की छत्रछाया में रह सकें और आने वाले समय में हीरो पार्ट बजा सकें।

सेक्रामेंटो-कैलिफोर्निया(यूएसए)। स्पीरिचुअल लाइफ सेंटर,सेक्रामेंटो के स्टाफ एवं समूह को ब्रह्माकुमारीज़ सेक्रामेंटो से ब्र.कु. हंसा बहन ने रक्षासूत्र बांधा। स्पीरिचुअल लाइफ सेंटर में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा रक्षाबंधन का यह सिलसिला 2001 से अनवरत चल रहा है।

चाइना-बीजिंग। इंडियन एम्बेसी द्वारा आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में ब्र.कु. सपना बहन को आमंत्रित किया गया। जहाँ पर ब्र.कु. सपना बहन ने रक्षाबंधन का आध्यात्मिक रहस्य बताते हुए वर्तमान में इसकी महत्ता के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने प्रदीप कुमार रावत,एम्बेसडर ऑफ इंडिया टू पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना एवं प्रो. जियांग जिंग हुई,डिपार्टमेंट ऑफ हिंदी लैंग्वेज एंड लिटरेचर को रक्षासूत्र बांधा और ब्रह्माकुमारीज़ की गतिविधियों से अवगत कराया।

सैन फ्रांसिस्को-यूएसए। न्यू यॉर्क के क्वींस सेंटर से ब्र.कु. माधवी बहन का सैन फ्रांसिस्को सेंटर पर आना हुआ। इस दौरान उन्होंने लाइव हार्प संगीत के साथ फ्राइडे मेडिटेशन का संचालन किया जिसका सभी ने भरपूर लाभ लिया।

यूक्रेन। मशनेट्स गांव स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के संगम रिट्रीट सेंटर में रक्षाबंधन के अवसर पर 'प्योरिटी, द फाउण्डेशन ऑफ ब्राह्मन्स लाइफ' विषय पर ब्र.कु. भाई-बहनों के लिए त्रिदिवसीय रिट्रीट का आयोजन हुआ जिसमें विभिन्न क्षेत्रों से 26 भाई-बहनें शामिल हुए।

सेक्रामेंटो-कैलिफोर्निया(यूएसए)। ब्रह्माकुमारीज़ ने एल्क ग्रोव,कैलिफोर्निया,यूएसए के 11वें वार्षिक बहु-सांस्कृतिक महोत्सव में उमंग-उत्साह के साथ भाग लिया। इस दौरान ब्र.कु. सविता बहन,न्यू यॉर्क ने अपने सुंदर विचार सभी के समक्ष रखे एवं ब्र.कु. हंसा बहन ने राजयोग मेडिटेशन द्वारा सभी को गहन शांति की अनुभूति कराई। साथ ही ब्र.कु. बहनों ने वहां उपस्थित सिटी मेयर, सिटी काउंसिल मेम्बर्स एवं पुलिस ऑफिसर्स को रक्षासूत्र बांधा जिसकी सभी ने सराहना की और सभी आनंदित हुए।

मुम्बई-मुलुंड। ब्रह्माकुमारीज़ के मुलुंड सबज़ोन के भव्य वार्षिकोत्सव कार्यक्रम में संस्थान के प्रशासनिक सेवा प्रभाग की अध्यक्ष एवं ओआरसी गुरुग्राम की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, मुलुंड सबज़ोन संचालिका राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. गोदावरी दीदी, प्रशासनिक प्रभाग के मुख्यालय समन्वयक ब्र.कु. हरीश भाई तथा अन्य-भाई शामिल रहे।

सिवनी-म.प्र.। विश्व बेटी दिवस के अवसर पर शासकीय कन्या शिक्षा परिसर सिवनी में छात्राओं को 'सशक्त बेटी सशक्त समाज' विषय पर सशक्त बनने की प्रेरणा देते हुए ब्र.कु. नीतू बहन।

ग्वालियर-म.प्र.। 'स्वच्छता ही सेवा' पखवाड़े के अंतर्गत नगर निगम ग्वालियर वार्ड 50 के द्वारा स्वच्छता अभियान के तहत महाराज बाड़े पर आयोजित कार्यक्रम में सांसद विवेक नारायण शेजवलकर, पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष कमल माखीजानी, पार्षद अनिल सांखला, पार्षद संजय पोतनिस, पूर्व नेता प्रतिपक्ष सुधीर गुप्ता, ब्रह्माकुमारीज़ से ब्र.कु. प्रहलाद भाई, अमर कुटे, महेश जैसवाल, जवाहर प्रजापति, वार्ड 50 के क्षेत्रीय अधिकारी सतेंद्र सोलंकी, स्वास्थ्य अधिकारी भीष्म पमनानी, अधीक्षण यंत्री के.बी. मिश्रा, किकी पंडित नगर निगम के कर्मचारी व ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के अनेकानेक सदस्यों सहित अन्य संस्थाओं के लोग शामिल रहे।

ग्लोबल पीस सम्मिट में राजयोगी ब्र.कु. सूर्य को नेलसन मंडेला लीडरशीप अवॉर्ड - 2023

लंदन-यूके। ब्रह्माकुमारी संगठन के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय माउण्ट आबू के वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. सूर्य तोमर को लन्दन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में एनआरआई वेल्फेयर सोसायटी ऑफ इंडिया की ओर से ग्लोबल पीस सम्मिट में 'नेलसन मंडेला लीडरशिप अवॉर्ड 2023' दिया गया। राजयोगी ब्र.कु. सूर्य ने लन्दन में हुए ग्लोबल पीस सम्मिट में विश्व के विभिन्न देशों से आई जानी-मानी हस्तियों को भारतीय पुरातन संस्कृति के अनुरुप जीवनशैली बनाए जाने पर बल दिया। ग्लोबल पीस सम्मिट कार्यक्रम में एनआरआई वेल्फेयर सोसायटी ऑफ इंडिया के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष गौहर नबाव, प्रेज़ीडेंट पद्मश्री डॉ. विजय कुमार शाह, अफ्रीका कांगो से आए राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार डॉ. जस्टिन बिसिम वामुडेके रेजा, एनआरआई कल्याण सोसायटी के सांस्कृति राजदूत दीपक सिंह आदि ने भारतीय संस्कृति की सराहना करते हुए ब्रह्माकुमारी संगठन के सहज राजयोग को जीवन में शामिल करने पर बल दिया। लन्दन सेवाकेन्द्र की वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. जेमिनी, राजयोग प्रशिक्षक ब्र.कु. रूपेश, प्रशिक्षिका ब्र.कु. गीता, दक्षिण अफ्रीका, यूएसए, कनाडा, मॉरिशियस, नेपाल, मलेशिया, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, नाईजीरिया, न्यूज़ीलैंड, ईरान, चीन, डेनमार्क, ट्रिनीडाड, म्यांमार, बहरीन, फिज़ी, केन्या आदि देशों के सैकड़ों की तादाद में सहभागियों ने भाग लिया।

राजधानी जयपुर से अभियान का शुभारम्भ

आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय

जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। प्रभु निधि सभागार में आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय(आरआईएसई) राष्ट्रीय अभियान के शुभारम्भ के अवसर पर सांसद राज्यवर्धन सिंह राठोर ने कहा कि आत्मविश्वास सफलता की सबसे बड़ी कुंजी है तथा खुद ही खुद के मित्र हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था द्वारा मूल्यनिष्ठ शिक्षा के क्षेत्र में चलाये जा रहे राष्ट्रव्यापी अभियान की सराहना की। आरयूएचएस के वाइस चांसलर डॉ. सुधीर भंडारी ने कहा कि मेडिटेशन से मन में खुशी देने वाले सकारात्मक हार्मोन सेरोटोनिन का निर्माण होता है। खुश रहने के लिए मेडिटेशन ही कुंजी है। राजस्थान यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर अल्पना कटेजा ने कहा कि आज के दौर में शिक्षा का अर्थ- ज्ञान और सूचना को अर्जित करना है परन्तु वास्तव में शिक्षा वही अर्थपूर्ण है जिसकी नींव में गुण एवं संस्कार हो और आध्यात्मिकता हो। लन्दन से पधारीं राजयोगिनी ब्र.कु. गोपी दीदी ने राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास करवाते हुए कहा कि मनुष्य के चरित्र को सशक्त बनाना राष्ट्र को सशक्त बनाने की कुंजी है। उन्होंने आगे कहा कि पहले 'आई क्यू' की बात होती थी उसके बाद 'ई क्यू' की बात होने लगी लेकिन अब युवाओं में 'एस क्यू' अर्थात् आध्यात्मिक बुद्धिमता की ज़रूरत है। शिक्षा पद्धति में आध्यात्मिक बुद्धिमता को शामिल करना होगा तभी युवा सही दिशा में आगे बढ़ सकता है। ब्रह्माकुमारीज़ जयपुर उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी सुषमा दीदी ने कहा कि समय परिवर्तनशील है एवं आने वाला समय बड़ा चुनौतिपूर्ण रहने वाला है, ऐसे में ब्रह्माकुमारीज़ संस्था समाज को आध्यात्मिक सेवाएं देने के लिए सदैव तत्पर है। वैशाली नगर सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी चन्द्रकला बहन ने आरआईएसई के बारे में बताते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर आरआईएसई(आध्यात्मिक सशक्तिकरण से स्वर्णिम भारत का उदय) अभियान चलाया जा रहा है, जिसका राष्ट्रीय शुभारम्भ भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती दौपदी मुर्मु ने ब्रह्माकुमारीज़ के अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय शांतिवन,आबू रोड में पधार कर किया। इस अभियान के अंतर्गत शिक्षा प्रभाग द्वारा 'राष्ट्रीय शिक्षा अभियान' के रूप में पूरे भारत वर्ष के स्कूल-कॉलेज के विद्यार्थियों और शिक्षकों को जीवन मूल्यों से सशक्त बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

प्रकृति के प्रति स्नेह के भाव बना देते हैं प्रकृति को शक्तिशाली

ओआरसी-गुरुग्राम। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रकृति के प्रति स्नेह का भाव प्रकृति में शक्ति पैदा करता है, उक्त विचार ओआरसी की निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी ने व्यक्त किए। ब्रह्माकुमारीज़ मुख्यालय, माउण्ट आबू से प्रभाग के संयोजक ब्र.कु. सुमंत ने कहा कि आध्यात्मिकता में अन्न का विशेष महत्त्व है। सात्विक अन्न से ही मन में सात्विक विचारों की उत्पत्ति होती है। उन्होंने कहा कि कृषि में योग की भूमिका को जानना ज़रूरी है। ईश्वरीय स्मृति में रहकर कृषि कार्य करने से फसल भी बहुत उत्तम होती है। जिला परिषद, गुरुग्राम की अध्यक्षा दीपाली चौधरी ने कहा कि सबसे बड़ा सुख निरोगी काया है। लेकिन निरोगी काया का आधार शक्तिशाली व सात्विक अन्न है। उन्होंने कहा कि ओआरसी के आध्यात्मिक वातावरण ने उन्हें प्रभावित किया। दिल्ली,किसान यूनियन के राष्ट्रीय महासचिव, शिव कुमार शर्मा ने कहा कि जैविक खेती ही वास्तव में स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का माध्यम है। उन्होंने जीवन में सात्विक अन्न को अपनाने का भी दृढ़ संकल्प लिया। संस्थान के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग के दिल्ली क्षेत्र संयोजक ब्र.कु. जयप्रकाश ने अन्न के महत्त्व के बारे में बताते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में भोजन की शुद्धता पर अधिक बल दिया जाता है। ईश्वरीय स्मृति में किया गया भोजन मन के श्रेष्ठ विचारों का आधार है। ध्यान रहे कि जीवन भोजन के लिए नहीं बल्कि जीने के लिए भोजन करना है। प्रभाग के दिल्ली क्षेत्र की संयोजिका राजयोगिनी ब्र.कु. राज दीदी ने कहा कि किसान अन्नदाता है। किसानों का खुशहाल जीवन ही देश में खुशहाली ला सकता है। प्रभाग के सक्रिय सदस्य ब्र.कु. सत्यवीर ने संस्था का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान का कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग केवल देश में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में अपनी सेवाएं दे रहा है। प्रभाग का मूल उद्देश्य शाश्वत यौगिक खेती को बढ़ावा देना है। पलवल से प्रभाग के सक्रिय सदस्य ब्र.कु. राजेन्द्र ने कहा कि भोजन पकाने और खाने के साथ-साथ महत्त्व अन्न के पैदावार के तरीके का भी है। आज ज़रूरत है जैविक खेती की। प्रकृति हमारी संवेदनाओं को ग्रहण करती है। इसलिए योग और जैविक आधार से हम अन्न को शुद्ध बना सकते हैं। ब्रह्माकुमारीज़ संस्था गांव-गांव में जाकर किसानों को जैविक खेती के बारे में जानकारी दे रही है। दिल्ली,अशोक विहार से ब्र.कु. सुनीता ने श्रेष्ठ विचारों के द्वारा कृषि में योग के प्रयोग का अभ्यास कराया। उन्होंने बताया कि योग से प्रकृति में सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जिससे कि प्रकृति भी हमारी सहयोगी बनती है। कृषि विज्ञान केंद्र, गुरुग्राम की वैज्ञानिक अनामिका शर्मा एवं गाजियाबाद से आए कृषि के जानकार रविन्द्र शर्मा ने भी कार्यक्रम के प्रति शुभकामनाएं व्यक्त की। राजयोगिनी ब्र.कु. प्रमोद बहन ने सबका आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन प्रभाग की सक्रिय सदस्य ब्र.कु. प्रमिला ने किया।

विश्व खाद्य दिवस पर विशेष कार्यक्रम...

- कोसली से मुस्कान एवं साथियों ने भोजन की गुणवत्ता की जानकारी देने वाले मनमोहक नाटक का सुंदर मंचन किया
- दिल्ली से मानसी और संजय ने हरियाणवी नृत्य के द्वारा सबका मन मोहा
- कार्यक्रम में 1000 से भी अधिक लोगों ने शिरकत की

सकारात्मकता ही समाधान परख मीडिया का आधार है - सुशांत

सकारात्मक पत्रकारिता को बढ़ावा देने हेतु पत्रकारों के लिए संगोष्ठी का आयोजन

ग्वालियर-म.प्र.। सकारात्मक पत्रकारिता न सिर्फ समाज में परिवर्तन लाती है, बल्कि हमारे जीवन में भी सुखद अनुभूति का एहसास कराती है। इसलिए पत्रकारों को अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए अपनी पत्रकारिता की दिशा सकारात्मक रखनी होगी, तभी वह पत्रकारिता का धर्म निभा पाएंगे। यह विचार ब्रह्माकुमारीज़ के मीडिया विंग द्वारा आयोजित कार्यशाला में 'सकारात्मक परिवर्तन के लिए जागरुक मीडिया' विषय पर हैदराबाद से पधारीं संस्था की राष्ट्रीय संयोजिका ब्र.कु. सरला दीदी ने व्यक्त किए। माउण्ट आबू से आए ब्र.कु. शांतनु ने कहा कि आज मूल्यनिष्ठ पत्रकारिता समय की मांग है। पत्रिका के स्थानीय संपादक नितिन त्रिपाठी ने कहा कि पत्रकार जब निःस्वार्थ भाव से काम करता है तो सकारात्मकता आती है। मीडिया के राष्ट्रीय कोऑर्डिनेटर ब्र.कु. सुशांत ने कहा कि पत्रकारिता का धर्म और मर्म सकारात्मक होना चाहिए। पत्रकार प्रोफेशन के साथ मिशन और विज़न को लेकर काम करें। स्वदेश के समूह संपादक अतुल तारे ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान पत्रकारों की बैटरी चार्ज करने का काम कर रही है, जिससे उनके जीवन में तनाव कम होता है। अहमदाबाद से आईं ब्र.कु. सारिका ने कहा कि मन को यदि जीत लें तो समझो जगत को जीत लिया। आईटीएम के मीडिया विभाग के प्रमुख डॉ. मनीष जैसल ने कहा कि सोशल मीडिया पर जो फेक कंटेन्ट आते हैं, उनसे सबको बचना चाहिए और उपयोग करने से पहले उनकी सत्यता का पता लगाना चाहिए। स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. आदर्श बहन ने सभी पत्रकारों को जीवन में थोडा समय स्वयं के लिए निकालने और राजयोग ध्यान का अभ्यास करने पर ज़ोर दिया। कार्यक्रम में ब्र.कु. ज्योति ने मेडिटेशन कराया तथा ब्र.कु. वैशाली भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गुरूचरण सिंह एवं आभार प्रदर्शन प्रहलाद भाई ने किया। कार्यक्रम के अंत में प्रेस क्लब ग्वालियर,म.प्र. पत्रकार संघ एवं एम.पी. वर्किंग जर्नलिस्ट के पदाधिकारियों ने ब्रह्माकुमारी संस्था के राष्ट्रीय मीडिया के कोऑर्डिनेटर्स को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में प्रिंट, इलेक्ट्रोनिक मीडिया के राजेश शर्मा, सुरेश शर्मा, सुरेन्द्र माथुर, विनय अग्रवाल, सुरेश सम्राट, नाशिर गौरी, राज दुवे, बृजमोहन, अजय मिश्रा, दिनेश राव, श्याम श्रीवास्तव, विनोद शर्मा, पत्रिका के यूनिट हेड मुकेश अग्रवाल सहित अनेकानेक अन्य वरिष्ठ पत्रकार एवं आई टी एम विश्व विद्यालय के जर्नलिज़्म डिपार्टमेंट की फैकल्टी एवं छात्र-छात्राएं शामिल हुए।

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/21-23, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2021-23, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 3rd Nov, 2023
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org